ओ३म्

वेदपाठः

सम्पादक : ब्र. अरुणकुमार "आर्यवीर"

प्रथम संस्करण २००० प्रति

प्रकाशन तिथि : मार्गशीर्ष २०७३ विक्रमी

सांतसा प्रकाशन

पाणिनीया पाठशाला, आर्ष शोध संस्थान,

अलियाबाद, मंडल शामीरपेट, जिला रंगारेड्डी, तेलंगाणा ५००१०१

दूरभाष : ७६६६९८६८३७, ७७३८२४४१९७

E-mail : 1aryaveer@gmail.com

Web : www.santasa.org

अनुक्रमणिका

अग्नि-सूक्तम् (ऋग्वेदस्य प्रथमे मण्डले प्रथमस्य अध्यायस्य प्रथमं सूक्तम्)..... ६
वागम्भृणी सूक्तम् (ऋग्वेदस्य दशमे मण्डले पञ्चविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्)..... ७
नासदीय सूक्त (ऋग्वेदस्य दशमे मण्डले एकोनत्रिंशत्तमोत्तरशततमम्)..... ८
श्रद्धा-सूक्तम् (ऋग्वेदस्य दशमे मण्डले एकपञ्चाशदुत्तरशततमम्)..... ९
संगठन सूक्त (ऋग्वेदस्य दशमे मण्डले एकनवत्युत्तरशततमम्)..... १०
पुरुष-सूक्तम् (यजुर्वेदीयः एकत्रिंशोध्यायः)..... ११
परमात्म-सूक्तम् (यजुर्वेदीयः द्वात्रिंशोध्यायः)..... १४
इन्द्र-सूक्तम् (यजुर्वेदीयः षट्त्रिंशोध्याय)..... १६
आत्म-सूक्तम् (यजुर्वेदीयः चत्वारिंशोध्यायः ईशोपनिषद् च)..... १९
सवितादेवताक-मन्त्राः (यजुर्वेदीयाः)..... २१
सामवेदस्य महावामदेव्यगानम् (उत्तरार्चिके प्रथमस्य अध्यायस्य प्रथमं सूक्तम्)..... २९
मेधासूक्तम् (अथर्ववेदस्य षष्ठे काण्डे अष्टोत्तरशततमं सूक्तम्)..... ३०
प्राण-सूक्तम् (अथर्ववेदस्य एकादशे काण्डे चतुर्थं सूक्तम्)..... ३१
ब्रह्मचर्य-सूक्तम् (अथर्ववेदस्य एकोनविंशतितमे काण्डे पञ्चमं सूक्तम्)..... ३४
पापविमोचक-सूक्तम् (अथर्ववेदस्य एकादशे काण्डे षष्ठं सूक्तम्)..... ३७
पृथिवी-सूक्तम् (अथर्ववेदस्य द्वादश काण्डे प्रथमं सूक्तम्)..... ४०
शान्ति-सूक्तम् (अथर्ववेदस्य एकोनविंशतितमे काण्डे नवमं सूक्तम्)..... ४७
जन्मदिन के मन्त्र..... ४९
आयुष्कामयज्ञः..... ५५
मृत्यु तथा दुःख विमोचन होम..... ६९
समृद्धिफलाय..... ७०
पुष्टिहेतुत्वम्..... ७१
कीर्तिफलायाज्यशस्त्र..... ७३
महानाम्निसंज्ञका मन्त्राः (धन एवं विजय हेतु)..... ७५
अन्नाद्यफलाय..... ७६
प्रजापशुकामः..... ७९
गौरी सम्बन्धित मन्त्राः..... ८०
गणपति सम्बन्धित मन्त्राः..... ८१
सरस्वतीदेवताक मन्त्राः..... ८२
स्वस्तिवाचनम्..... ८६
शान्तिकरणमम्..... ९०
बृहद्यज्ञ-मन्त्रपाठः..... ९४

सम्पादकीयः

"वेद सब सत्यविद्याओं की पुस्तक है" महर्षि दयानन्द जी के इस उद्घोष एवं "वेद का पढ़ना-पढ़ाना सुनना-सुनाना सभी आर्यों का परम धर्म है" इस प्रकार के स्पष्ट निर्देश के कारण ही जन्मना ब्राह्मणों तक परिसीमित वेदपाठ की परम्परा जन-सामान्य तक प्रचलित हो पाई। जहां एक ओर आर्य समाज द्वारा संचालित गुरुकुलों में यज्ञोपरान्त वेदपाठ की पावन परम्परा सर्वत्र देखी जा सकती है, वहीं अनेकों वेद-निष्ठावान् एवं स्वाध्यायशील आर्य महानुभाव अपनी दिनचर्या में वेदपाठ की परम्परा को अपने व्यक्तिगत या पारिवारिक स्तर पर अपनाए हुए हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में वेद के चुने हुए प्रसिद्ध सूक्तों एवं विभिन्न कामनाओं की पूर्ति के लिए किए जानेवाले यज्ञों में प्रयुक्त मन्त्रों के समुच्चयों का समावेश किया गया है। इसीलिए यह संग्रह गुरुकुलों, पुरोहितों, आचार्यों के साथ-साथ वेदपाठाभिलाषी जन-सामान्य के लिए भी उपादेय बन चुकी है।

आर्य-जगत् में अपने लम्बे प्रचार अन्तराल के बाद इस वर्ष तीन माह पूर्व गुरुकुल में रहते विद्याध्ययन का जब निर्णय लिया गया तब दैनिक वेदपाठ हेतु इस प्रकार के संग्रह की आवश्यकता अनुभव में आई। उस प्रयास में अन्य कतिपय प्रकरण जोड़कर टंकित एवं सांतसा प्रकाशन द्वारा मुद्रित कराने का सौभाग्य ईश्वर की असीम अनुकम्पा से मुझे प्राप्त हो रहा है। पुस्तक हेतु अर्थ प्रबन्ध अपने स्वर्गीय माता-पिता की स्मृति में मुम्बई निवासी श्री शान्तिभाई पटेल ने किया है एतदर्थ आप सभी पाठकों की ओर से धन्यवाद करना चाहता हूं। इस सुप्रयास में संस्था की उपाचार्या नीरजा जी ने अतिव्यस्तता में भी समय निकालकर जो अनुशोधनादि कार्यों में योगदान दिया इसके लिए मैं आप का कृतज्ञ हूं तथा ब्रह्मचारी राजेन्द्र जी का भी सहयोग प्राप्त हुआ है। आशा करता हूँ, आर्य जगत् में यह प्रयास ऋषि आदेश की पूर्ति में सभी के द्वारा अपनाया जाएगा..!!

..."आर्यवीर"

पुरोवाक्

संसार में विद्यमान अनेकानेक योनियों में से एक मानवयोनि ऐसी योनि है जिसमें पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणनामानि एवं पाँचों कर्मेन्द्रियाँ वाक्पपायूपस्थपाणिपादसंज्ञकानि पूर्णतः विकसित हैं। यह सुविधा मात्र मानव-योनि में ही क्यों है ? संसार के अन्य प्रणियों में यह सुविधा क्यों नहीं है ? क्योंकि मानवयोनि में रहकर ही जीवात्मा परमात्मा के आनन्द को मोक्ष के रूप में पा सकता है। इसलिए मानव जीवन का एकमात्र मुख्य लक्ष्य मुक्ति पाना ही होना चाहिए। केनोपनिषद के दूसरे खण्ड के पाँचवें श्लोक में चेतावनी दी गई है- **"इहचेदवेदीदथ सत्यमस्ति न चेदिहावेदीन्महति विनष्टिः। भूतेषु भूतेषु विचित्य धीराः प्रेत्यास्माल्लँल्लो-कादमृताः भवन्ति।।"** अर्थात् इस मानव जन्म में यदि आप ने परमात्मतत्त्व को जान लिया तो ठीक है, सत्य है; यदि नहीं तो महान् क्षति = विनाश = हानि है। क्योंकि जीवात्मा संसार के भिन्न-भिन्न योनियों में घूमकर मानवयोनि में आता है। मानवयोनि से ही वह मुक्ति को पाता है। परन्तु आज की शिक्षा पद्धति एवं दिनचर्या में, आज के बच्चों एवं युवा पीढ़ी को समाज में इस ओर ध्यान आकृष्ट ही नहीं किया जाता। जन्म लेते ही आधुनिक शिक्षा, इलेक्ट्रॉनिक सुविधा एव विदेशी जीवन पद्धति को अपनाने का जो भूत लोगों पर सवार है उसके कारण मानव जीवन का मुख्य लक्ष्य क्या होना चाहिए, तदनुसार जीवन कैसा होना चाहिए इस पर किसी का ध्यान ही नहीं जाता। मुक्ति पाने के लिए कैसी जीवनशैली होनी चाहिए इस बात को महर्षि मनु ने अपने मनुधर्मशास्त्र के १२ वें अध्याय के ८३ वें श्लोक में इस प्रकार बताया- **"वेदाभ्यासस्तपोज्ञानमिन्द्रियाणां च संयमः। अहिंसा गुरुसेवा च, निःश्रेयस करम्परम्।।"** अर्थात् वेदों का अभ्यास, तपस्या, ज्ञान, इन्द्रियों का संयम, अहिंसा का पालन और माता-पिता-आचार्य आदि गुरुजनों की सेवा ये मोक्ष प्राप्त करानेवाले श्रेष्ठ साधन हैं। मनु के इस निर्देश के अनुसार बचपन में ही बच्चों को निष्प्रयोजन आंग्लभाषी गीतों (rhymes) के स्थान पर मानवजीवन के लक्ष्यानुसार वेदमन्त्रों को सिखाना चाहिए इस उद्देश्य से मैंने अपने पुत्र तत्त्वदर्शी को एवं आर्ष-शोध-संस्थान की कन्याओं को नित्यप्रति जिन वेदमन्त्रों को सिखाकर वेद-पाठ कराया, उनका संकलन इस पुस्तक में मुद्रित है। इनमें अधिकांश मन्त्रों का संकलन कान्तिमयी आर्या ने अपने विद्यार्थी जीवन में आर्ष शोध संस्थान में पढ़ते हुए किया है। आशा करते हैं सभी माताएँ अपने बच्चों को भौतिक जीवन की सुविधाओं को जुटाने की विद्या के साथ-साथ धीरे-धीरे इन मन्त्रों का अभ्यास कराकर उन्हें मनुष्य जीवन के मुख्य लक्ष्य पर अग्रसर करेंगी..!!

...आचार्या नीरजा।

अथ सङ्कल्पपाठः

ओ३म् तत्सत् अद्य ब्रह्मणो द्वितीये प्रहरार्द्धे श्वेत-वराह-कल्पे-सप्तमे वैवस्वत-मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथमचरणे ससन्धौ-एकार्बुद-सप्तनवतिकोटि-एकोनत्रिंशल्लक्ष-एकोन-पञ्चाशत्सहस्र-सप्तदशोत्तरशततमे सृष्ट्यब्दे असन्धौ-एकार्बुद-षण्णवतिकोटि-अष्टलक्ष-त्रिपञ्चाशत्सहस्र-सप्तदशोत्तरशततमे सृष्ट्यब्दे त्रिसप्तत्युत्तर-विक्रमाब्दे श्री दुर्मुखि नाम संवत्सरे अस्मिन् वर्तमान-व्यावहारिक-चान्द्रमाने दक्षिणायने .... ऋतौ .... मासे शुक्ल/कृष्णपक्षे .... तिथौ .... नाम नक्षत्रे .... वासरे जम्बूद्वीपे भरतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्ते पुण्यभूमौ मेरोः दक्षिण दिग्विभागे श्रीशैलस्य वायव्यप्रदेशे कृष्णागोदावर्योः मध्यदेशे तेलगाणप्रान्तअन्तर्गते भाग्यनगरे रंगारेड्डि जनपदे अलियाबाद ग्रामे आर्षशोधसंस्थाने गायत्री यज्ञशालायां वयं नित्याग्निहोत्रस्य प्रातःकालिकं/सायंकालिकं सत्रं जुहुमः।

अथ अग्निसूक्तम्

(ऋग्वेदस्य प्रथमे मण्डले प्रथमस्य अध्यायस्य प्रथमं सूक्तम्)

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।। १।।

अग्निः पूर्वभिर्ऋषिभिरीड्यो नूतनैरुत। स देवाँ एह वक्षति।। २।।

अग्निना रयिमश्नवत् पोषमेव दिवेदिवे। यशसं वीरवत्तमम्।। ३।।

अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वतः परिभूरसि। स इद्देवेषु गच्छति।। ४।।

अग्निर्होता कविक्रतुः सत्यश्चित्रश्रवस्तमः। देवो देवेभिरा गमत्।। ५।।

यदङ् दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि। तवेत्तत् सत्यमङ्गिरः।। ६।।

उप त्वाग्ने दिवदिवे दोषावस्तर्धिया वयम्। नमो भरन्त एमसि।। ७।।

राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्। वर्धमानं स्वे दमे।। ८।।

स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव। सचस्वा नः स्वस्तये।। ९।।

इति अग्नि सूक्तम्

(ऋग्वेदस्य प्रथमे मण्डले प्रथमस्य अध्यायस्य प्रथमं सूक्तम्)

आर्ष शोध संस्थान, अलियाबाद एक परिचय..

लगभग नौ वर्षों तक बोईनपल्ली आर्य समाज सिकन्दराबाद में अत्यन्त निष्ठा एवं परिश्रम से आचार्याओं को तैयार करके उनके नेतृत्व में संवत् २०५५ वि. में शिवरात्रि के दिन, तदनुसार १९/२/१९९९ ई. को अलियाबाद ग्राम में आर्ष-शोध-संस्थान नाम से एक कन्या गुरुकुल का शिलान्यास किया गया। स्वल्प समय में ही न्यूनतम आवासीय निर्माणकार्य को पूरा करके संवत् २०५७ वि. में दीपावली के दिन, तदनुसार २७/१०/२००० ई. को नए भवन में अध्ययन-अध्यापन प्रारम्भ हुआ।

अथ वागाम्भृणी सूक्तम्

(ऋग्वेदस्य दशमे मण्डले पञ्चविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्)

अहं रुदेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुत विश्वदेवैः।
अहं मित्रावरुणोभा बिभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा।। १।।

अहं सोममाहनसं बिभर्म्यहं त्वष्टारमुत पूषणं भगम्।
अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये३ यजमानाय सुन्वते।। २।।

अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्।
तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्यावेशयन्तीम्।। ३।।

मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति यः प्राणिति य ईं शृणोत्युक्तम्।
अमन्तवो मां त उप क्षियन्ति श्रुधि श्रुत श्रद्धिवं ते वदामि।। ४।।

अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः।
यं कामये तंतमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम्।। ५।।

अहं रुद्राय धनुरा तनोमि ब्रह्मद्विषे शरवे हन्तवा उ।
अहं जनाय समदं कृणोम्यहं द्यावापृथिवी आ विवेश।। ६।।

अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे।
ततो वि तिष्ठे भुवनानु विश्वोतामूं द्यां वर्ष्मणोप स्पृशामि।। ७।।

अहमेव वातइव प्र वाम्यारभमाणा भुवनानि विश्वा।
परो दिवा पर एना पृथिव्यैतावती महिना सं बभूव।। ८।।

इति वागाम्भृणी सूक्तम्

ऋग्वेदस्य दशमे मण्डले पञ्चविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

अथ नासदीय सूक्तम्

(ऋग्वेदस्य दशमे मण्डले एकोनत्रिंशत्तमोत्तरशततमम्)

नासदासीन्नो सदासीत्तदानीं नासीद्रजो नो व्योमा परो यत्।
किमावरीवः कुह कस्य शर्मन्नम्भः किमासीद्गहनं गभीरम्।। १।।

न मृत्युरासीदमृतं न तर्हि न रात्र्या अह्न आसीत्प्रकेतः।
आनीदवातं स्वधया तदेकं तस्माद्धान्यन्न परः किं चनास।। २।।

तम आसीत्तमसा गूळ्हमग्रेऽप्रकेतं सलिलं सर्वमा इदम्।
तुच्छ्येनाभ्वपिहितं यदासीत्तपसस्तन्महिना जायतैकम्।। ३।।

कामस्तदग्रे समवर्ततााधि मनसो रेतः प्रथमं यदासीत्।
सतो बन्धुमसति निरविन्दन्हृदि प्रतीष्या कवयो मनीषा।। ४।।

तिरश्चीनो विततो रश्मिरेषामधः स्विदासी३दुपरि स्विदासी३त्।
रेतोधा आसन्महिमान आसन्त्स्वधा अवस्तात्प्रयतिः परस्तात्।। ५।।

को अद्धा वेद क इह प्र वोचत्कुत आजाता कुत इयं विसृष्टिः।
अर्वाग्देवा अस्य विसर्जनेनाथा को वेद यत आबभूव।। ६।।

इयं विसृष्टिर्यत आबभूव यदि वा दधे यदि वा न।
यो अस्याध्यक्षः परमे व्योमन्त्सो अङ्ग वेद यदि वा न वेद।।
।। ७।। (ऋग्वेद मं-१०, सूक्त-१२९)

इति नासदीय सूक्तम्

ऋग्वेदस्य दशमे मण्डले एकोनत्रिंशत्तमोत्तरशततमम्

अथ श्रद्धा सूक्तम्

(ऋग्वेदस्य दशमे मण्डले एकपञ्चाशदुत्तरशततमम्)

श्रद्धयाग्निः समिध्यते श्रद्धया हूयते हविः।
श्रद्धां भगस्य मूर्धनि वचसा वेदयामसि।। १।।

प्रियं श्रद्धे ददतः प्रियं श्रद्धे दिदासतः।
प्रियं भोजेषु यज्वस्विदं म उदितं कृधि।। २।।

यथा देवा असुरेषु श्रद्धामुग्रेषु चक्रिरे।
एवं भोजेषु यज्वस्वस्माकमुदितं कृधि।। ३।।

श्रद्धां देवा यजमाना वायुगोपा उपासते।
श्रद्धां हृदय्यऽयाकूत्या श्रद्धया विन्दते वसु।। ४।।

श्रद्धां प्रातर्हवामहे श्रद्धां मध्यंन्दिनं परि।
श्रद्धां सूर्यस्य निम्रुचि श्रद्धे श्रद्धापयेह नः।। ६।।

इति श्रद्धा सूक्तम्

ऋग्वेदस्य दशमे मण्डले एकपञ्चाशदुत्तरशततमम्

आर्ष शोध संस्थान, अलियाबाद एक परिचय..

इस संस्थान/गुरुकुल में महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा सत्यार्थ प्रकाश आदि पुस्तकों में निर्दिष्ट पाठविधि के अनुसार आर्ष पद्धति से अध्यापन होता है। इससे अल्पकाल में ही पाणिनीय-व्याकरण, निरुक्त, षडदर्शन तथा अन्य वेद-वेदांगादि विषयों की पारंगत विदुषियाँ एवं आदर्श महिलाएं तैयार हो सकें। वैदिक विद्वानों की निरन्तर होती जा रही कमी को यथासम्भव पूरा किया जा सके। वैदिक एवं ऋषियों की विद्या का देश-विदेश में व्यापक प्रचार-प्रसार हो सके तथा प्राचीन वैदिक-ग्रन्थों के विभिन्न भाषाओं में प्रामाणिक भाष्य हो सकें।

अथ संगठन-सूक्तम्

(ऋग्वेदस्य दशमे मण्डले एकनवत्युत्तरशततमम्)

संसमिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ।
इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर।।१।।

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।।२।।

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।।३।।

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।। ।।

इति संगठन-सूक्तम्

ऋग्वेदस्य दशमे मण्डले एकनवत्युत्तरशततमम्

आर्ष शोध संस्थान, अलियाबाद एक परिचय..

अध्यात्म प्रधान जीवन व्यतीत करते हुए सात्विक आहार, प्रतिदिन संधिवेला में संध्या–अग्निहोत्र तथा आर्ष ग्रन्थों का अत्यन्त उत्साह एवं परिश्रम से अध्ययन–अध्यापन यह कन्या गुरुकुल की विशेषता है। आर्ष पाठविधि से अध्ययन–अध्यापन के अतिरिक्त इस संस्थान/गुरुकुल की अन्य विशेषताएं हैं– क) आवास, भोजन, वस्त्र, पुस्तकें, एवं अध्यापन आदि की समान निःशुल्क व्यवस्था। ख) संस्कृत सम्भाषण। ग) आध्यात्मिक प्रशिक्षण। घ) पौरोहित्य प्रशिक्षण। ङ) भविष्य में किए जानेवाले अनुसंधान आदि को ध्यान में रखकर छात्राओं को संगणक यन्त्र का प्रशिक्षण (कम्प्यूटर ट्रेनिग) आदि।

अथ पुरुषसूक्तम्

(यजुर्वेदीयः एकत्रिंशोध्यायः)

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमि ꣳ सर्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।। १।।

पुरुष ऽएवेद ꣳ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।। २।।

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः।
पादो ऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।। ३।।

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादो ऽस्येहाभवत्पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने ऽअभि।। ४।।

ततो विराडजायत विराजो ऽअधि पूरुषः।
स जातो ऽअत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः।। ५।।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये।। ६।।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऽऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दा ꣳ सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।। ७।।

तस्मादश्वा ऽअजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता ऽअजावयः।। ८।।

तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा ऽअयजन्त साध्या ऽऋषयश्च ये।। ९।।

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमूरू पादाऽउच्येते।।१०।।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या ꣳ शूद्रोऽअजायत।। ११।।

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽअजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।। १२।।

नाभ्याऽआसीदन्तरिक्ष ꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँऽ अकल्पयन्।।१३।।

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः।।१४।।

सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वानाऽअबध्नन् पुरुषं पशुम्।।१५।।

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।। १६।।

अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्त्तताग्रे।
तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे।। १७।।

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्।
तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।। १८।।

प्रजापतिश्चरति गर्भेऽअन्तरजायमानो बहुधा वि जायते।
तस्य योनिं परि पश्यन्ति धीरास्तस्मिन्ह तस्थुर्भुवनानि विश्वा।। १९।।

यो देवेभ्यऽआतपति यो देवानां पुरोहितः।
पूर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय ब्राह्मये।। २०।।

रुचं ब्राह्मं जनयन्तो देवाऽअग्रे तदब्रुवन्।
यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्तस्य देवाऽअसन्वशे।। २१।।

श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं मऽइषाण सर्वलोकं मऽइषाण।। २२।।

इति पुरुषसूक्तम् यजुर्वेदीयः एकत्रिंशोध्यायः

आर्ष शोध संस्थान, अलियाबाद एक परिचय..

कन्या गुरुकुल में प्रवेश पाने हेतु नियम :-

१. आर्ष-शोध-संस्थान (कन्या-गुरुकुल) में प्रवेश के लिए दसवीं कक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होना एवं हिन्दी भाषा का पढ़ना, लिखना, बोलना, समझना आवश्यक है।

२. अध्ययन काल में छात्राओं को घर जाने की अनुमति नहीं है। माता-पिता गुरुकुल में आकर अपनी पुत्रियों को देख सकते हैं।

३. अध्ययन काल में अध्ययन-अध्यापन एवं गुरुकुल की आन्तरिक व्यवस्था में निर्धारित नियमों/अनुशासन का पालन करना अनिवार्य है।

४. यहां पढ़ते समय किसी प्रकार की राजकीय परिक्षाएं नहीं दिलाई जाएंगी। अध्ययनोपरान्त व्याकरण की छात्राओं से राष्ट्रीय-संस्कृत-संस्थान, मानद-विश्वविद्यालय (डीम्ड यूनिवर्सिटि), तिरुपति आं.प्र. से आचार्य (एम.ए.) की परीक्षाएं दिलवाई जा सकती हैं।

५. प्रवेशार्थ यहां आने से पूर्व दूरभाष अथवा पत्र द्वारा सम्पर्क कर लेवें।

.....आचार्य आनन्दप्रकाश

अथ परमात्मसूक्तम्

(यजुर्वेदीयः द्वात्रिंशोध्यायः)

तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमाः।
तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म ताऽआपः स प्रजापतिः।। १।।

सर्वे निमेषा जज्ञिरे विद्युतः पुरुषादधि।
नैनमूर्ध्वं न तिर्य्यञ्चं न मध्ये परि जग्रभत्।। २।।

न तस्य प्रतिमाऽअस्ति यस्य नाम महद्यशः।
हिरण्यगर्भऽइत्येष मा मा हि सीदित्येषा यस्मान्न जातऽइत्येषः।। ३।।

एषो ह देवः प्रदिशोऽनु सर्वाः पूर्वो ह जातः सऽउ गर्भेऽ अन्तः।
सऽएव जातः स जनिष्यमाणः प्रत्यङ् जनास्तिष्ठति सर्वतोमुखः।। ४।।

यस्माज्जातं न पुरा किं चनैव य आबभूव भुवनानि विश्वा।
प्रजापतिः प्रजया स ꣳ रराणस्त्रीणि ज्योतीꣳषि सचते स षोडशी।। ५।।

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्व स्तभितं येन नाकः।
योऽअन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम।। ६।।

यं क्रन्दसीऽअवसा तस्तभानेऽअभ्यैक्षेतां मनसा रेजमाने।
यत्राधि सूरऽउदितो विभाति कस्मै देवाय हविषा विधेम।
आपो ह यद् बृहतीर्यश्चिदापः।। ७।।

वेनस्तत्पश्यन्निहितं गुहा सद्यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्। तस्मिन्निद ꣳ सं च वि चैति सर्व ꣳ सऽओतः प्रोतश्च विभूः प्रजासु।। ८।।

प्र तद्वोचेदमृतं नु विद्वान् गन्धर्वो धाम विभृतं गुहा सत्। त्रीणि पदानि निहिता गुहास्य यस्तानि वेद स पितुः पितासत्।। ९।।

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा। यत्र देवाऽअमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त।। १०।।

परीत्य भूतानि परीत्य लोकान् परीत्य सर्वाः प्रदिशो दिशश्च। उपस्थाय प्रथमजामृतस्यात्मनात्मानमभि सं विवेश।। ११।।

परि द्यावापृथिवी सद्यऽइत्वा परि लोकान् परि दिशः परि स्वः। ऋतस्य तन्तुं विततं विचृत्य तदपश्यत्तदभवत्तदासीत्।। १२।।

सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्।
सनिं मेधामयासिषꣳ स्वाहा।। १३।।

यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा।। १४।।

मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः।
मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा।। १५।।

इदं मे ब्रह्म च क्षत्रं चोभे श्रियमश्नुताम्।
मयि देवा दधतु श्रियमुत्तमां तस्यै ते स्वाहा।। १६।।

इति परमात्मसूक्तम् यजुर्वेदीयः द्वात्रिंशोध्यायः

सङ्गच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्। (ऋग्. 10/191/2)
हे मनुष्यों आप परस्पर मिलकर रहो, परस्पर मिलकर वार्तालाप करो, आपके मन एकसमान विचार करें।

अथ इन्द्रसूक्तम्

(यजुर्वेदीयः षट्त्रिंशोध्याय)

ऋचं वाचं प्र पद्ये मनो यजुः प्र पद्ये साम प्राणं प्र पद्ये चक्षुः श्रोत्रं प्र पद्ये। वागोजः सहौजो मयि प्राणापानौ।। १।।

यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो वातितृण्णं बृहस्पतिर्मे तद्दधातु। शं नो भवतु भुवनस्य यस्पतिः।। २।।

भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।। ३।।

कया नश्चित्रऽआ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता।। ४।।

कस्त्वा सत्यो मदानां मꣳ हिष्ठो मत्सदन्धसः। दृढा चिदारुजे वसु।। ५।।

अभी षु णः सखीनामविता जरितॄणाम्। शतं भवास्यूतिभिः।। ६।।

कया त्वं नऽऊत्याभि प्र मन्दसे वृषन्। कया स्तोतृभ्यऽआ भर।। ७।।

इन्द्रो विश्वस्य राजति।शन्नोऽअस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे।। ८।।

शन्नो मित्रः शं वरुणः शन्नो भवत्वर्य्यमा। शन्नऽइन्द्रो बृहस्पतिः शन्नो विष्णुरुरुक्रमः।। ९।।

शन्नो वातः पवता ꣳ शन्नस्तपतु सूर्य्यः। शन्नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्योऽअभि वर्षतु।। १०।।

अहानि शं भवन्तु नः श ꣳ रात्रीः प्रति धीयताम्।
शन्न ऽइन्द्राग्नी भवतामवोभिः शन्न ऽइन्द्रावरुणा रातहव्या।
शन्न ऽइन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शंयोः।। ११।।

शन्नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभि स्रवन्तु नः।। १२।।

स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी।
यच्छा नः शर्म सप्रथाः।। १३।।

आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऽऊर्जे दधातन।
महे रणाय चक्षसे।। १४।।

यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः।
उशतीरिव मातरः।। १५।।

तस्मा ऽअरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ।
आपो जनयथा च नः।। १६।।

द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।। १७।।

दृते दृ ꣳ ह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।। १८।।

दृते दृ ꣳ ह मा। ज्योक्ते संदृशि जीव्यासं ज्योक्ते संदृशि जीव्यासम्।। १९।।

नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्तेऽअस्त्वर्चिषे। अन्याँस्तेऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽअस्मभ्य ꣳ शिवो भव।। २०।।

नमस्तेऽअस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयित्नवे।
नमस्ते भगवन्नस्तु यतः स्वः समीहसे।। २१।।

यतो यतः समीहसे ततो नोऽअभयं कुरु।
शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।। २२।।

सुमित्रिया नऽआपऽओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु।
योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः।। २३।।

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्।
पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ꣳ शृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।। २४।।

इति इन्द्रसूक्तम् यजुर्वेदीयः षट्त्रिंशोध्यायः

मोह एव महामृत्युर्मुमुक्षोर्वपुरादिषु।
मोहो विनिर्जितो येन स मुक्तिपदमर्हति।।

(विवेक चूडामणि ८७)

मुक्ति की इच्छावाले मनुष्य के लिए उसका शरीरादि में मोह होना ही महामृत्यु के समान है। जिसने मोह को जीत लिया, वह मुक्ति के पद को पाता है।

अथ आत्मसूक्तम्

(यजुर्वेदीयः चत्वारिंशोध्यायः ईशोपनिषद् च)

ईशा वास्यमिद ꣳ सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।। १।।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत ꣳ समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।। २।।

असुर्य्या नाम ते लोकाऽअन्धेन तमसावृताः।
ताँस्ते प्रेत्यापि गच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः।। ३।।

अनेजदेकं मनसो जवीयो नैनद्देवाऽआप्नुवन् पूर्वमर्शत्।
तद्धावतोऽन्यानत्येति तिष्ठत्तस्मिन्नपो मातरिश्वा दधाति।। ४।।

तदेजति तन्नैजति तद्दूरे तद्वन्तिके।
तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः।। ५।।

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्नेवानुपश्यति।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न वि चिकित्सति।। ६।।

यस्मिन्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः।
तत्र को मोहः कः शोकऽएकत्वमनुपश्यतः।। ७।।

स पर्य्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरꣳ शुद्धमपापविद्धम्। कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः।। ८।।

अन्धन्तमः प्रविशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते।
ततो भूयऽइव ते तमो यऽउ सम्भूत्याꣳ रताः।। ९।।

अन्यदेवाहुः सम्भवादन्यदाहुरसम्भवात्।
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे।। १०।।

सम्भूतिं च विनाशं च यस्तद्वेदोभय ꣳ सह।
विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा सम्भूत्यामृतमश्नुते।। ११।।

अन्धन्तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते।
ततो भूयऽइव ते तमो यऽउ विद्यायाꣳ रताः।। १२।।

अन्यदेवाहुर्विद्याया ऽअन्यदाहुरविद्यायाः।
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे।। १३।।

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभय ꣳ सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते।। १४।।

वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्त ꣳ शरीरम्।
ओ३म् क्रतो स्मर। क्लिबे स्मर। कृत ꣳ स्मर।। ।। १५।।

अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमऽउक्तिं विधेम।। १६।।

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
योऽसावादित्ये पुरुषः सो ऽसावहम्। ओ३म् खं ब्रह्म।। १७।।

इति आत्मसूक्तम् यजुर्वेदीयः चत्वारिंशोध्यायः ईशोपनिषच्च

सत्यस्य नावः सुकृतमपीपरन्। (ऋग्. 9/73/1)

सत्य की नौकाएं शुभकर्मकर्ता को संसार से पार कर देती हैं।

सवितादेवताक-मन्त्राः

इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्यायध्वमघ्न्याऽइन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवाऽअयक्ष्मा मा व स्तेनऽईशत माघशꣳसो ध्रुवाऽअस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि।। १।। (यजु.१/१)

वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः।। २।। (यजु.१/३)

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। अग्नये जुष्टं गृह्णाम्यग्निषोमाभ्यां जुष्टं गृह्णामि।। ३।। (यजु.१/१०)

धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा। दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोऽसि।। ४।। (यजु.१/२०)

पृथिवी देवयजन्योषध्यास्ते मूलं मा हिꣳसिषं व्रजं गच्छ गोष्ठानं वर्षतु ते द्यौर्बधान देव सवितः परमस्यां पृथिव्याꣳ शतेन पाशैर्योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मस्तमतो मा मौक्।। ५।। (यजु.१/२५)

अपाररुं पृथिव्यै देवयजनाद्वध्यासं व्रजं गच्छ गोष्ठानं वर्षतु ते द्यौर्बधान देव सवितः परमस्यां पृथिव्याꣳ शतेन पाशैर्योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मस्तमतो मा मौक्।
अररो दिवं मा पप्तो द्रप्सस्ते द्यां मा स्कन् व्रजं गच्छ गोष्ठानं वर्षतु ते द्यौर्बधान देव सवितः परमस्यां पृथिव्याꣳ शतेन पाशैर्योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मस्तमतो मा मौक्।। ६।। (यजु.१/२६)

एतं ते देव सवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे।
तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिं तेन मामव।। ७।। (यजु.२/१२)

तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।। ८।। (यजु.३/३५)

अभि त्यं देव ꣳ सवितारमोण्योः कविक्रतुमर्चामि सत्यसव ꣳ रत्नधामभि प्रियं मतिं कविम्। ऊर्ध्वा यस्यामतिर्भा ऽअदिद्युतत्सवीमनि हिरण्यपाणिरमिमीत। सुक्रतुः कृपा स्वः प्रजाभ्यस्त्वा प्रजास्त्वा ऽनुप्राणन्तु प्रजास्त्वमनुप्राणिहि।। ६।। (यजु.४/२५)

युञ्जते मन ऽउत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः। वि होत्रा दधे वयुनाविदेक ऽइन्मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः स्वाहा।। १४।। (यजु.५/१४)

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे ऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। आददे नार्यसीदमह ꣳ रक्षसां ग्रीवा ऽअपि कृन्तामि। यवो ऽसि यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीर् दिवे त्वा ऽन्तरिक्षाय त्वा पृथिव्यै त्वा शुन्धन्ताँल्लोकाः पितृषदनाः पितृषदनमसि।। १५।। (यजु.६/१)

अग्रेणीरसि स्वावेश ऽउन्नेतृणामेतस्य वित्तादधि त्वा स्थास्यति देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु सुपिप्पलाभ्यस्त्वौषधीभ्यः। द्यामग्रेणास्पृक्ष ऽआन्तरिक्षं मध्येनाप्राः पृथिवीमुपरेणादृ ꣳ हीः।। १६।। (यजु.६/२)

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे ऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। अग्निषोमाभ्यां जुष्टं नियुनज्मि। अद्भ्यस्त्वौषधीभ्यो ऽनु त्वा माता मन्यतामनु पितानु भ्राता सगर्भ्यो ऽनु सखा सयूथ्यः। अग्निषोमाभ्यां त्वा जुष्टं प्रोक्षामि।। १७।। (यजु.६/९)

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।
आददे रावासि गभीरमिममध्वरं कृधीन्द्राय सुषूतमम्।
उत्तमेन पविनोर्जस्वन्तं मधुमन्तं पयस्वन्तं निग्राभ्या स्थ देवश्रुतस्तर्प्पयत मा।। १८।। (यजु.६/३०)

उपयामगृहीतोऽसि सावित्रोऽसि चनोधाश्चनोधाऽअसि चनो मयि धेहि।
जिन्व यज्ञं जिन्व यज्ञपतिं भगाय देवाय त्वा सवित्रे।। १९।। (यजु.८/७)

देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाजं नः स्वदतु।। २०।। (यजु.९/१)

इन्द्रस्य वज्रोऽसि वाजसास्त्वयाऽयं वाज ꣳ सेत्। वाजस्य नु प्रसवे मातरं महीमदितिं नाम वचसा करामहे। यस्यामिदं विश्वं भुवनमाविवेश तस्यां नो देवः सविता धर्म साविषत्।। २१।। (यजु.९/५)

देवस्याह ꣳ सवितुः सवे सत्यप्रसवसो बृहस्पतेर्वाजजितो वाजं जेषम्। वाजिनो वाजजितोऽध्वन स्कभ्नुवन्तो योजना मिमानाः काष्ठां गच्छत।। २२।। (यजु.९/१३)

युञ्जानः प्रथमं मनस्तत्त्वाय सविता धियः।
अग्नेर्ज्योतिर्निचाय्य पृथिव्याऽअध्याभरत्।। २३।। (यजु.११/१)

युक्तेन मनसा वयं देवस्य सवितुः सवे।
स्वर्ग्याय शक्त्या।। २४।। (यजु.११/२)

युक्त्वाय सविता देवान्त्स्वर्य्यतो धिया दिवम्।
बृहज्ज्योतिः करिष्यतः सविता प्रसुवाति तान्।। २५।। (यजु.११/३)

युञ्जते मनऽउत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः। वि होत्रा दधे वयुनाविदेकऽइन्महो देवस्य सवितुः परिष्टुतिः।। २६।। (यजु.११/४)

युजे वां ब्रह्म पूर्व्यं नमोभिर्वि श्लोकऽएतु पथ्येव सूरेः। शृण्वन्तु विश्वेऽअमृतस्य पुत्राऽआ ये धामानि दिव्यानि तस्थुः।। २७।। (यजु.११/५)

यस्य प्रयाणमन्वन्यऽइद्ययुर्देवा देवस्य महिमानमोजसा। यः पार्थिवानि विममे सऽएतशो रजाꣳसि देवः सविता महित्वना।। २८।। (यजु.११/६)

देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतन्नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु।। २९।। (यजु.११/७)

इमं नो देव सवितर्यज्ञं प्रणय देवाव्य ꣳ सखिविद ꣳ सत्राजितं धनजितꣳ स्वर्जितम्। ऋचा स्तोम ꣳ समर्धय गायत्रेण रथन्तरं बृहद्गायत्रवर्त्तनि स्वाहा।। ३०।। (यजु.११/८)

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। आददे गायत्रेण छन्दसाङ्गिरस्वत्पृथिव्याः सधस्थादग्निं पुरीष्यमङ्गिरस्वदाभर त्रैष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वत्।। ३१।। (यजु.११/९)

अभ्रिरसि नार्यसि त्वया वयमग्नि ꣳ शकेम खनितु ꣳ सधस्थ आ। जागतेन छन्दसाङ्गिरस्वत्।। ३२।। (यजु.११/१०)

हस्तऽआधाय सविता बिभ्रदभ्रि ꣳ हिरण्ययीम्। अग्नेर्ज्योतिर्निचाय्य पृथिव्याऽअध्याभरदानुष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वत्।। ३३।। (यजु.११/११)

विश्वा रूपाणि प्रतिमुञ्चते कविः प्रासावीद् भद्रं द्विपदे चतुष्पदे। वि नाकमख्यत्सविता वरेण्योऽनु प्रयाणमुषसो विराजति।। ३४।। (यजु.१२/३)

सजूरब्दोऽअयवोभिः सजूरुषाऽअरुणीभिः। सजोषसावश्विना दꣳसोभिः सजूः सूरऽएतशेन सजूर्वैश्वानरऽइडया घृतेन स्वाहा।। ३५।। (यजु.१२/७४)

उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च।
मां पुनीहि विश्वतः।। ३६।। (यजु.१९/४३)

सीसेन तन्त्रं मनसा मनीषिणऽऊर्णासूत्रेण कवयो वयन्ति। अश्विना यज्ञꣳसविता सरस्वतीन्द्रस्य रूपं वरुणो भिषज्यन्।। ३७।। (यजु.१९/८०)

इन्द्रः सुत्रामा हृदयेन सत्यं पुरोडाशेन सविता जजान।
यकृत् क्लोमानं वरुणो भिषज्यन् मतस्ने वायव्यैर्न मिनाति पित्तम्।। ३८।। (यजु.१९/८५)

आन्त्राणि स्थालीर्मधु पिन्वमाना गुदाः पात्राणि सुदुघा न धेनुः। श्येनस्य पत्रं न प्लीहा शचीभिरासन्दी नाभिरुदरं न माता।। ३९।। (यजु.१९/८६)

तेजोऽसि शुक्रममृतमायुष्पाऽआयुर्मे पाहि। देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यामाददे।। ४०।। (यजु.२२/१)

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।। ४१।। (यजु.२२/९)

हिरण्यपाणिमूतये सवितारमुप ह्वये।
स चेत्ता देवता पदम्।। ४२।। (यजु.२२/१०)

देवस्य चेततो महीं प्र सवितुर्हवामहे।
सुमतिꣳसत्यराधसम्।। ४३।। (यजु.२२/११)

सुष्टुति ꣳ सुमतीवृधो राति ꣳ सवितुरीमहे।
प्र देवाय मतीविदे।। ४४।। (यजु.२२/१२)

राति ꣳ सत्पतिं महे सवितारमुप ह्वये। आसवं देववीतये।। ४४।। (यजु.२२/१३)

देवस्य सवितुर्मतिमासवं विश्वदेव्यम्।
धिया भगं मनामहे।। ४५।। (यजु.२२/१४)

न वाऽउऽएतान्म्रियसे न रिष्यसि देवाँऽइदेषि पथिभिः सुगेभिः।
यत्रासते सुकृतो यत्र ते युयुस्तत्र त्वा देवः सविता दधातु।। ४६।। (यजु.२३/१६)

देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु।। ४७।। (यजु.३०/१)

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।। ४८।। (यजु.३०/२)

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्रं तन्नऽआ सुव।। ४९।। (यजु.३०/३)

विभक्तार ꣳ हवामहे वसोश्चित्रस्य राधसः।
सवितारं नृचक्षसम्।। ५०।। (यजु.३०/४)

महोऽअग्नेः समिधानस्य शर्मण्यनागा मित्रे वरुणे स्वस्तये। श्रेष्ठे स्याम सवितुः सवीमनि तद्देवानामवोऽअद्या वृणीमहे।। ५१।। (यजु.३३/१७)

यदद्य सूरऽउदितेऽनागा मित्रोऽअर्य्यमा।
सुवाति सविता भगः।। ५२।। (यजु.३३/२०)

आ नऽइडाभिर्विदथे सुशस्ति विश्वानरः सविता देवऽएतु।
अपि यथा युवानो मत्सथा नो विश्वं जगदभिपित्वे मनीषा।। ५३।। (यजु.३३/३४)

अदब्धेभिः सवितः पायुभिष्ट्व ꣳ शिवेभिरद्य परि पाहि नो गयम्।
हिरण्यजिह्वः सुविताय नव्यसे रक्षा माकिर्नो ऽअघश ꣳ सऽ ईशत।। ५४।। (यजु.३३/६९)

अदब्धेभिः सवितः पायुभिष्ट्व ꣳ शिवेभिरद्य परि पाहि नो गयम्।
हिरण्यजिह्वः सुविताय नव्यसे रक्षा माकिर्नो ऽअघश ꣳ सऽ ईशत।। ५५।। (यजु.३३/८४)

अष्टौ व्यख्यत्ककुभः पृथिव्यास्त्री धन्व योजना सप्त सिन्धून्।
हिरण्याक्षः सविता देवऽआगाद्दधद्रत्ना दाशुषे वार्य्याणि।। ५६।। (यजु.३४/२४)

हिरण्यपाणिः सविता विचर्षणिरुभे द्यावापृथिवी ऽअन्तरीयते। अपामीवां बाधते वेति सूर्यमभि कृष्णेन रजसा द्यामृणोति।। ५७।। (यजु.३४/२५)

हिरण्यहस्तो ऽअसुरः सुनीथः सुमृडीकः स्ववाँ यात्वर्वाङ्। अपसेधन्-रक्षसो यातुधानानस्थाद्देवः प्रतिदोषं गृणानः।। ५८।। (यजु.३४/२६)

ये ते पन्थाः सवितः पूर्व्यासो ऽरेणवः सुकृता ऽअन्तरिक्षे।
तेभिर्नो ऽअद्य पथिभिः सुगेभी रक्षा च नो ऽअधि च ब्रूहि देव।। ५९।। (यजु.३४/२७)

सविता ते शरीरेभ्यः पृथिव्यां लोकमिच्छतु।
तस्मै युज्यन्तामुस्रियाः।। ६०।। (यजु.३५/२)

वायुः पुनातु सविता पुनात्वग्नेर्भ्राजसा सूर्यस्य वर्चसा।
वि मुच्यन्तामुस्रियाः।। ६१।। (यजु.३५/३)

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।
आ ददे नारिरसि।। ६२।। (यजु.३७/१)

युञ्जते मनऽउत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः।
वि होत्रा दधे वयुनाविदेकऽइन्महीदेवस्य सवितुः परिष्टुतिः।। ६३।। (यजु.३७/२)

यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्य्यस्य त्वा तपसे।
देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु पृथिव्याः स ꣳ स्पृशस्पाहि।
अर्चिरसि शोचिरसि तपोऽसि।। ६४।। (यजु.३७/११)

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।
आ ददेऽदित्यै रास्नासि।। ६५।। (यजु.३८/१)

उद्वयन्तमसस्परि स्वः पश्यन्तऽउत्तरम्।
देवं देवत्रा सूर्य्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।। ६६।। (यजु.३८/२४)

सविता प्रथमेऽहन्नग्निर्द्वितीये वायुस्तृतीयऽआदित्यश्चतुर्थे चन्द्रमाः। पञ्चमऽऋतुः षष्ठे मरुतः सप्तमे बृहस्पतिरष्टमे। मित्रो नवमे वरुणो दशमऽइन्द्रऽएकादशे विश्वेदेवा द्वादशे।। ६७।। (यजु.३९/६)

इति सरस्वतीदेवताक मन्त्राः

अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः। (मनु. 3/70)

अध्यापन करना (पढ़ाना) ब्रह्मयज्ञ है।

(सामवेदस्य महावामदेव्यगानम्)

कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा।
कया शचिष्ठया वृता।।१।।

कस्त्वा सत्यो मदानां मꣳहिष्ठो मत्सदन्धसः।
दृढा चिदारुजे वसु।।२।।

अभी षु णः सखीनामविता जरितॄणाम्।
शतं भवास्यूतये।।३।।

महावामदेव्यम्- काऽ५या। नश्चा३ यित्रा३ आभुवात्। ऊ। ती सदावृध सखा। ओ३होहाइ। कया २३ शचाइ। ष्ठयौहो। हुम्मा२। वा२र्तो३ऽ५हाइ।।(१)।।

काऽ५स्त्वा। सत्योऽ३मा३दानाम्। मा। हिष्ठो मात्सादन्ध। सा। औ३होहाइ। दृढा २३ चिदा। रुजौहौ३। हुम्मा२। वाऽ३सो३ऽ५ हायि।।(२)।।

आऽ५भी। षु णा३ः सा३खीनाम्। आ। विता जरायितृ। णाम्। औ२३ हो हायि। शता २३ म्भवा। सियौहो३। हुम्मा२। ताऽ२ यो३ऽ५हायि।।(३)।।

इति सामवेदस्य उत्तरार्चिके प्रथमस्य अध्यायस्य प्रथमं सूक्तम्

अकर्मा दस्युः। (ऋग्. 10/22/8)
कर्म किए बिना सुख–सुविधाएं लेनेवाला डाकू है।

अथ मेधा सूक्तम्

(अथर्ववेदस्य षष्ठे काण्डे अष्टोत्तरशततमं सूक्तम्)

त्वं नो मेधे प्रथमा गोभिरश्वेभिरा गहि।
त्वं सूर्यस्य रश्मिभिस्त्वं नो असि यज्ञिया।। १।।

मेधामहं प्रथमां ब्रह्मण्वतीं ब्रह्मजूतामृषिष्टुताम्।
प्रपीतां ब्रह्मचारिभिर्देवानामवसे हुवे।। २।।

यां मेधामृभवो विदुर्यां मेधामसुरा विदुः।
ऋषयो भद्रां मेधां यां विदुस्तां मय्या वेशयामसि।। ३।।

यामृषयो भूतकृतो मेधां मेधाविनो विदुः।
तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कृणु।। ४।।

मेधां सायं मेधां प्रातर्मेधां मध्यन्दिनं परि।
मेधां सूर्यस्य रश्मिभिवर्चसा वेशयामहे।। ५।।

इति मेधा सूक्तम् अथर्ववेदस्य षष्ठे काण्डे अष्टोत्तरशततमं सूक्तम्

यदिच्छसि वशीकर्त्तुं जगदेकेन कर्मणा।
परापवादसस्येभ्यो गां चरन्तीं निवारय।।

हे मनुष्य यदि तू एक ही कर्म के द्वारा संसार को अपने वश में करना चाहता है तो दूसरों की निन्दा करने में लगी हुई अपनी वाणी को वश में कर अर्थात् किसी की निन्दा मत कर।

अथ प्राण सूक्तम्

(अथर्ववेदस्य एकादशे काण्डे चतुर्थं सूक्तम्)

प्राणाय नमो यस्य सर्वमिदं वशे।
यो भूतः सर्वस्येश्वरो यस्मिन्त्सर्वं प्रतिष्ठितम्।। १।।

नमस्ते प्राण क्रन्दाय नमस्ते स्तनयित्नवे।
नमस्ते प्राण विद्युते नमस्ते प्राण वर्षते।। २।।

यत्प्राण स्तनयित्नुनाभिक्रन्दत्योषधीः।
प्र वीयन्ते गर्भान्दधतेऽथो बह्वीर्वि जायन्ते।। ३।।

यत्प्राण ऋतावागतेऽभिक्रन्दत्योषधीः।
सर्वं तदा प्र मोदते यत्किं च भूम्यामधि।। ४।।

यदा प्राणो अभ्यवर्षीद्वर्षेण पृथिवीं महीम्।
पशवस्तत्प्र मोदन्ते महो वै नो भविष्यति।। ५।।

अभिवृष्टा ओषधयः प्राणेन समवादिरन्।
आयुर्वै नः प्रातीतरः सर्वा नः सुरभीरकः।। ६।।

नमस्ते अस्त्वायते नमो अस्तु परायते।
नमस्ते प्राण तिष्ठत आसीनायोत ते नमः।। ७।।

नमस्ते प्राण प्राणते नमो अस्त्वपानते।
पराचीनाय ते नमः प्रतीचीनाय ते नमः सर्वस्मै त इदं नमः।। ८।।

या ते प्राण प्रिया तनूर्यो ते प्राण प्रेयसी।
अथो यद्भेषजं तव तस्य नो धेहि जीवसे।। ९।।

प्राणः प्रजा अनु वस्ते पिता पुत्रमिव प्रियम्।
प्राणो ह सर्वस्येश्वरो यच्च प्राणति यच्च न।। १०।।

प्राणो मृत्युः प्राणस्तक्मा प्राणं देवा उपासते।
प्राणो ह सत्यवादिनमुत्तमे लोक आ दधत्।। ११।।

प्राणो विराट् प्राणो देष्ट्री प्राणं सर्व उपासते।
प्राणो ह सूर्यश्चन्द्रमाः प्राणमाहुः प्रजापतिम्।। १२।।

प्राणापानौ व्रीहियवावनड्वान्प्राण उच्यते।
यवे ह प्राण आहितोऽपानो व्रीहिरुच्यते।। १३।।

अपानति प्राणति पुरुषो गर्भे अन्तरा।
यदा त्वं प्राण जिन्वस्यथ स जायते पुनः।। १४।।

प्राणमाहुर्मातरिश्वानं वातो ह प्राण उच्यते।
प्राणे ह भूतं भव्यं च प्राणे सर्वं प्रतिष्ठितम्।। १५।।

आथर्वणीराङ्गिरसीर्दैवीर्मनुष्यजा उत।
ओषधयः प्र जायन्ते यदा त्वं प्राण जिन्वसि।। १६।।

यदा प्राणो अभ्यवर्षीद्वर्षेण पृथिवीं महीम्।
ओषधयः प्रजायन्तेऽथो याः काश्च वीरुधः।। १७।।

यस्ते प्राणेदं वेद यस्मिंश्चासि प्रतिष्ठितः।
सर्वे तस्मै बलिं हरानमुष्मिँल्लोक उत्तमे।। १८।।

यथा प्राण बलिहृतस्तुभ्यं सर्वाः प्रजा इमाः।
एवा तस्मै बलिं हरान्यस्त्वा शृणवत्सुश्रवः।। १९।।

अन्तर्गर्भश्चरति देवतास्वाभूतो भूतः स उ जायते पुनः।
स भूतो भव्यं भविष्यत्पिता पुत्रं प्र विवेशा शचीभिः।। २०।।

एकं पादं नोत्खिदति सलिलाद्धंस उच्चरन्। यदङ्ग स तमुत्खिदेत्रैवाद्य
न श्वः स्यान्न रात्री नाहः स्यान्न व्युच्छेत्कदा चन।। २१।।

अष्टाचक्रं वर्तत एकनेमि सहस्राक्षरं प्र पुरो नि पश्चा।
अर्धेन विश्वं भुवनं जजान यदस्यार्धं कतमः स केतुः।। २२।।

यो अस्य विश्वजन्मन ईशे विश्वस्य चेष्टतः।
अन्येषु क्षिप्रधन्वने तस्मै प्राण नमोऽस्तु ते।। २३।।

यो अस्य सर्वजन्मन ईशे सर्वस्य चेष्टतः।
अतन्द्रो ब्रह्मणा धीरः प्राणो मानु तिष्ठतु।। २४।।

ऊर्ध्वः सुप्तेषु जागार ननु तिर्यङ् नि पद्यते।
न सुप्तमस्य सुप्तेष्वनु शुश्राव कश्चन।। २५।।

प्राण मा मत्पर्यावृतो न मदन्यो भविष्यसि।
अपां गर्भमिव जीवसे प्राण बध्नामि त्वा मयि।। २६।।

इति प्राण सूक्तम् अथर्ववेदस्य एकादशे काण्डे चतुर्थं सूक्तम्

अश्रद्धा परम पापं श्रद्धा पापप्रमोचनी।
जहाति पापं श्रद्धावान् सर्पो जीणामिव त्वचम्।।

(महाभारत शान्तिपर्व २६४/१५)

श्रद्धा न रखना परम पाप है, जबकि श्रद्धा अनेक पापों से मुक्त करानेवाली है। श्रद्धालु मनुष्य वैसे ही पाप को त्याग देता है, जैसे सांप पुरानी केंचुली को।

अथ ब्रह्मचर्यसूक्तम्

(अथर्ववेदस्य एकादशे काण्डे पञ्चमं सूक्तम्)

ब्रह्मचारीष्णंश्चरति रोदसी उभे तस्मिन्देवाः संमनसो भवन्ति।
स दाधार पृथिवीं दिवं च स आचार्यं तपसा पिपर्ति।। १।।

ब्रह्मचारिणं पितरो देवजनाः पृथग्देवा अनुसंयन्ति सर्वे।
गन्धर्वा एनमन्वायन्त्रयस्त्रिंशत्त्रिशताः षट्सहस्राः सर्वान्त्स देवांस्तपसा पिपर्ति।। २।।

आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणं कृणुते गर्भमन्तः।
तं रात्रीस्तिस्र उदरे बिभर्ति तं जातं द्रष्टुमभिसंयन्ति देवाः।। ३।।

इयं समित्पृथिवी द्यौर्द्वितीयोतान्तरिक्षं समिधा पृणाति।
ब्रह्मचारी समिधा मेखलया श्रमेण लोकांस्तपसा पिपर्ति।। ४।।

पूर्वो जातो ब्रह्मणो ब्रह्मचारी घर्मं वसानस्तपसोदतिष्ठत्। तस्माज्जातं ब्राह्मणं ब्रह्म ज्येष्ठं देवाश्च सर्वे अमृतेन साकम्।। ५।।

ब्रह्मचार्येति समिधा समिद्धः कार्ष्णं वसानो दीक्षितो दीर्घश्मश्रुः।
स सद्य एति पूर्वस्मादुत्तरं समुद्रं लोकान्त्संगृभ्य मुहुराचरिक्रत्।। ६।।

ब्रह्मचारी जनयन्ब्रह्मापो लोकं प्रजापतिं परमेष्ठिनं विराजम्।
गर्भो भूत्वामृतस्य योनाविन्द्रो ह भूत्वासुरांस्ततर्ह।। ७।।

आचार्य स्ततक्ष नभसी उभे इमे उर्वी गम्भीरे पृथिवीं दिवं च।
ते रक्षति तपसा ब्रह्मचारी तस्मिन्देवाः संमनसो भवन्ति।। ८।।

इमां भूमिं पृथिवीं ब्रह्मचारी भिक्षामा जभार प्रथमो दिवं च।
ते कृत्वा समिधावुपास्ते तयोरार्पिता भुवनानि विश्वा।। ९।।

अर्वागन्यः परो अन्यो दिवस्पृष्ठाद्गुहा निधी निहितौ ब्राह्मणस्य।
तौ रक्षति तपसा ब्रह्मचारी तत्केवलं कृणुते ब्रह्म विद्वान्।।१०।।

अर्वागन्य इतो अन्यः पृथिव्या अग्नी समेतो नभसी अन्तरेमे।
तयोः श्रयन्ते रश्मयोऽधि दृढास्ताना तिष्ठति तपसा ब्रह्मचारी।। ११।।

अभिक्रन्दन् स्तनयन्नरुणः शितिङ्गो बृहच्छेपोऽनु भूमौ जभार।
ब्रह्मचारी सिञ्चति सानौ रेतः पृथिव्यां तेन जीवन्ति प्रदिशश्चतस्रः।। १२।।

अग्नौ सूर्ये चन्द्रमसि मातरिश्वन्ब्रह्मचार्यप्सु समिधमा दधाति।
तासामर्चींषि पृथगभ्रे चरन्ति तासामाज्यं पुरुषो वर्षमापः।। १३।।

आचार्यो मृत्युर्वरुणः सोम ओषधयः पयः।
जीमूता आसन्त्सत्वानस्तैरिदं स्वराभृतम्।। १४।।

अमा घृतं कृणुते केवलमाचार्यो भूत्वा वरुणो यद्यदैच्छत्प्रजापतौ।
तद् ब्रह्मचारी प्रायच्छत्स्वान्मित्रो अध्यात्मनः।। १५।।

आचार्यो ब्रह्मचारी ब्रह्मचारी प्रजापतिः।
प्रजापतिर्वि राजति विराडिन्द्रोऽभवद्वशी।। १६।।

ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं विरक्षति।
आचार्यो ब्रह्मचर्येण ब्रह्मचारिणम् इच्छते।। १७।।

ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्।
अनड्वान्ब्रह्मचर्येणाश्वो घासं जिगीर्षति।। १८।।

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत।
इन्द्रो ह ब्रह्मचर्येण देवेभ्यः स्वराभरत्।। १९।।

ओषधयो भूतभव्यमहोरात्रे वनस्पतिः।
संवत्सरः सहर्तुभिस्ते जाता ब्रह्मचारिणः।। २०।।

पार्थिवा दिव्याः पशव आरण्या ग्राम्याश्च ये।
अपक्षाः पक्षिणश्च ये ते जाता ब्रह्मचारिणः।। २१।।

पृथक्सर्वे प्राजापत्याः प्राणानात्मसु बिभ्रति।
तान्त्सर्वान्ब्रह्म रक्षति ब्रह्मचारिण्याभृतम्।। २२।।

देवानामेतत्परिषूतमनभ्यारूढं चरति रोचमानम्।
तस्माज्जातं ब्राह्मणं ब्रह्म ज्येष्ठं देवाश्च सर्वे अमृतेन साकम्।। २३।।

ब्रह्मचारी ब्रह्म भ्राजद्बिभर्ति तस्मिन्देवा अधि विश्वे समोताः।
प्राणापानौ जनयन्नाद् व्यानं वाचं मनो हृदयं ब्रह्म मेधाम्।। २४।।

चक्षुः श्रोत्रं यशो अस्मासु धेह्यन्नं रेतो लोहितमुदरम्।। २५।।

तानि कल्पद् ब्रह्मचारी सलिलस्य पृष्ठे तपोऽतिष्ठत्तप्यमानः समुद्रे।
स स्नातो बभ्रुः पिङ्गलः पृथिव्यां बहु रोचते।। २६।। (अथर्व.११/५)

इति ब्रह्मचर्य सूक्तम्

अथर्ववेदस्य एकादशे काण्डे पञ्चमं सूक्तम्

मृत्यु की अनिवार्यता

कः कं शक्तो रक्षितुं मृत्युकाले रज्जुच्छेदे के घटं धारयन्ति।
एवं लोकस्तुल्यधर्मो वनानां काले काले छिद्यते रुह्यते च।।

मृत्युकाल के उपस्थित होने पर कौन किसको बचा सकता है? रस्सी के, बीच में से टूट जाने पर (नीचे लटके) घड़े को कौन थाम सकता है? यह संसार जंगल के तुल्य धर्मवाला है; जो समय-समय पर काटा जाता है, और कट-कट कर फिर बढ़ जाता है।

अथ पाप विमोचक सूक्तम्

(अथर्ववेदस्य एकादशे काण्डे षष्ठं सूक्तम्)

अग्निं ब्रूमो वनस्पतीनोषधीरुत वीरुधः।
इन्द्रं बृहस्पतिं सूर्यं ते नो मुञ्चन्त्वंहसः।। १।।

ब्रूमो राजानं वरुणं मित्रं विष्णुमथो भगम्।
अंशं विवस्वन्तं ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः।। २।।

ब्रूमो देव सवितारं धातारमुत पूषणम्।
त्वष्टारमग्रियं ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः।। ३।।

गन्धर्वाप्सरसो ब्रूमो अश्विना ब्रह्मणस्पतिम्।
अर्यमा नाम यो देवस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः।। ४।।

अहोरात्रे इदं ब्रूमः सूर्याचन्द्रमसावुभा।
विश्वानादित्यान्ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः।। ५।।

वातं ब्रूमः पर्जन्यमन्तरिक्षमथो दिशः।
आशाश्च सर्वा ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः।। ६।।

मुञ्चन्तु मा शपथ्या दहोरात्रे अथो उषाः।
सोमो मा देवो मुञ्चतु यमाहुश्चन्द्रमा इति।। ७।।

पार्थिवा दिव्याः पशव आरण्या उत ये मृगाः।
शकुन्तान्पक्षिणो ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः।। ८।।

भवाशर्वाविदं ब्रूमो रुद्रं पशुपतिश्च यः।
इषुर्या एषां संविद्म ता नः सन्तु सदा शिवाः।। ९।।

दिवं ब्रूमो नक्षत्राणि भूमिं यक्षाणि पर्वतान्।
समुद्रा नद्यो वेशन्तास्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः।। १०।।

सप्तर्षीन्वा इदं ब्रूमोऽपो देवीः प्रजापतिम्।
पितॄन्यमश्रेष्ठान्ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः।। ११।।

ये देवा दिविषदो अन्तरिक्षसदश्च ये।
पृथिव्यां शक्रा ये श्रितास्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः।। १२।।

आदित्या रुद्रा वसवो दिवि देवा अथर्वाणः।
अङ्गिरसो मनीषिणस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः।। १३।।

यज्ञं ब्रूमो यजमानमृचः सामानि भेषजा।
यजूंषि होत्रा ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः।। १४।।

पञ्च राज्यानि वीरुधां सोमश्रेष्ठानि ब्रूमः।
दर्भो भङ्गो यवः सहस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः।। १५।।

अरायान्ब्रूमो रक्षांसि सर्पान्पुण्यजनान्पितॄन्।
मृत्युनेकशतं ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः।। १६।।

ऋतून्ब्रूम ऋतुपतीनार्तवानुत हायनान्।
समाः संवत्सरान्मासांस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः।। १७।।

एत देवा दक्षिणतः पश्चात्प्राञ्च उदेत।
पुरस्तादुत्तराच्छक्रा विश्वे देवाः समेत्य ते नो मुञ्चन्त्वंहसः।। १८।।

विश्वान्देवानिदं ब्रूमः सत्यसंधानृतावृधः।
विश्वाभिः पत्नीभिः सह ते नो मुञ्चन्त्वंहसः।। १९।।

सर्वान्देवानिदं ब्रूमः सत्यसंधानृतावृधः।
सर्वाभिः पत्नीभिः सह ते नो मुञ्चन्त्वंहसः।। २०।।

भूतं ब्रूमो भूतपतिं भूतानामुत यो वशी।
भूतानि सर्वा संगत्य ते नो मुञ्चन्त्वंहसः।। २१।।

या देवीः पञ्च प्रदिशो ये देवा द्वदशर्तवः।
संवत्सरस्य ये दंष्ट्रास्ते नः सन्तु सदा शिवाः।। २२।।

यन्मातली रथक्रीतममृतं वेद भेषजम्।
तदिन्द्रो अप्सु प्रावेशयत्तदापो दत्त भेषजम्।। २३।।

इति पाप विमोचक सूक्तम्

अथर्ववेदस्य एकादशे काण्डे षष्ठं सूक्तम्

घातयितुमेव नीचः परकार्यं वेत्ति न प्रसादयितुम्। पातयितुमस्ति शक्तिर्वायोर्वृक्षं न चोन्नमितुम्।। अधम पुरुष पराए कार्यों को नष्ट करना ही जानता है, किन्तु बनाना नहीं जानता। जिस प्रकार वायु की शक्ति वृक्षों को उखाड़ने की ही है, किन्तु गिरे हुए वृक्ष को जमाने में नहीं।

पतितः पशुरपि कूपे निःसर्त्तुं चरणचालनं कुरुते। धिक् त्वां चित्त भवाब्देरिच्छामपि नो बिभर्षि निःसर्त्तुम्।। कुंए में गिरा हुआ पशु भी उसमें से निकलने के लिए पैर चलाता है, प्रयत्न करता है, पर हे मन ! तुझे धिक्कार है, तू भवसागर से निकलने की इच्छा भी नहीं करता।

अथ पृथिवीसूक्तम्

(अथर्ववेदस्य द्वादश काण्डे प्रथमं सूक्तम्)

सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु।। १।।

असंबाधं मध्यतो मानवानां यस्या उद्वतः प्रवतः समं बहु।
नानावीर्या ओषधीर्या बिभर्ति पृथिवी नः प्रथतां राध्यतां नः।। २।।

यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो यस्यामन्नं कृष्टय सम्बभूवुः।
यस्यामिदं जिन्वति प्राण देजत्सा नो भूमिः पूर्वपेये दधातु।। ३।।

यस्याश्चतस्रः प्रदिशः पृथिव्या यस्यामन्नं कृष्टयः सम्बभूवुः।
या बिभर्ति बहुधा प्राण देजत्सा नो भूमिर्गोष्वप्यन्ने दधातु।। ४।।

यस्यां पूर्वे पूर्वजना विचक्रिरे यस्यां देवा असुरानभ्यवर्तयन्।
गवामश्वानां वसयश्च विष्ठा भगं वर्चः पृथिवी नो दधातु।। ५।।

विश्वम्भरा वसुधानी प्रतिष्ठा हिरण्यवक्षा जगतो निवेशनी।
वैश्वानरं बिभ्रती भूमिरग्निमिन्द्रऋषभा द्रविणे नो दधातु।। ६।।

यां रक्षन्त्यस्वप्ना विश्वदानीं देवा भूमिं पृथिवीमप्रमादम्।
सा नो मधु प्रियं दुहामथो उक्षतु वर्चसा।। ७।।

यार्णवेधि सलिलमग्र आसीद्यां मायाभिरन्वचरन्मनीषिणः।
यस्या हृदयं परमे व्योमन्त्सत्येनावृतममृतं पृथिव्याः।
सा नो भूमिस्त्विषिं बलं राष्ट्रे दधातूत्तमे।। ८।।

यस्यामापः परिचराः समानीरहोरात्रे अप्रमादं क्षरन्ति।
सा नो भूमिर्भूरिधारा पयो दुहामथो उक्षतु वर्चसा।। ९।।

यामश्विनावमिमातां विष्णुर्यस्यां विचक्रमे इन्द्रो यां चक्र आत्मने-ऽनमित्रां शचीपतिः। सा नो भूमिर्विसृजतां माता पुत्राय मे पयः।। १०।।

गिरयस्ते पर्वता हिमवन्तोऽरण्यं ते पृथिवि स्योनमस्तु।
बभ्रुं कृष्णां रोहिणीं विश्वरूपां ध्रुवां भूमिं पृथिवीमिन्द्रगुप्ताम्।
अजीतोऽहतो अक्षतोऽध्यष्ठां पृथिवीमहम्।। ११।।

यत्ते मध्यं पृथिवि यच्च नभ्यं यास्त ऊर्जस्तन्वः सम्बभूवुः।
तासु नो धेह्यभि नः पवस्व माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।
पर्जन्य पिता स उ न पिपर्तु।। १२।।

यस्यां वेदिं परिगृह्णन्ति भूम्यां यस्यां यज्ञं तन्वते विश्वकर्माणः।
यस्यां मीयन्ते स्वरवः पृथिव्यमूर्ध्वाः शुक्रा आहुत्याः पुरस्तात्।
सा नो भूमिर्वर्धयद्वर्धमाना।। १३।।

यो नो द्वेषत्पृथिवि यः पृतन्याद्योऽभिदासान्मनसा यो वधेन।
तं नो भूमे रन्धय पूर्वकृत्वरि।। १४।।

त्वज्जातास्त्वयि चरन्ति मर्त्यास्त्वं बिभर्षि द्विपदस्त्वं चतुष्पदः।
तवेमे पृथिवि पञ्च मानवा येभ्यो ज्योतिरमृतं मर्त्येभ्य उद्यन्त्सूर्यो रश्मिभिरातनोति।। १५।।

ता नः प्रजाः सं दुहतां समग्रा वाचो मधु पृथिवि देहि मह्यम्।। १६।।

विश्वस्त्वं मातरमोषधीनां ध्रुवां भूमिं पृथिवीं धर्मणा धृताम्।
शिवां स्योनामनु चरेम विश्वहा।। १७।।

महत्सधस्थं महती बभूविथ महान्वेग एजथुर्वेपथुष्टे।
महांस्त्वेन्द्रो रक्षत्यप्रमादम्।। सा नो भूमे प्र रोचय हिरण्यस्येव संदृशि मा नो द्विक्षत कश्चन।। १८।।

अग्निर्भूम्यामोषधीष्वग्निमापो बिभ्रत्यग्निरश्मसु।
अग्निरन्तः पुरुषेषु गोष्वश्वेष्वग्नयः।। १९।।

अग्निर्दिव आ तपत्यग्नेर्देवस्योर्वन्तरिक्षम्।
अग्निं मर्तास इन्धते हव्यवाहं घृतप्रियम्।। २०।।

अग्निवासाः पृथिव्य सितज्रूस्त्विषिमन्तं संशितं मा कृणोतु।। २१।।

भूम्यां देवेभ्यो ददति यज्ञं हव्यमरङ्कृतम्।
भूम्यां मनुष्या जीवन्ति स्वधयान्नेन मर्त्याः।
सा नो भूमिः प्राणमायुर्दधातु जरदष्टिं मा पृथिवी कृणोतु।। २२।।

यस्ते गन्धः पृथिवि संबभूव यं बिभ्रत्योषधयो यमापः। यं गन्धर्वा अप्सरसश्च भेजिरे तेन मा सुरभिं कृणु मा नो द्विक्षत कश्चन।। २३।।

यस्ते गन्धः पुष्करमाविवेश यं संजभ्रुः सूर्याया विवाहे। अमर्त्याः पृथिवि गन्धमग्रे तेन मा सुरभिं कृणु मा नो द्विक्षत कश्चन।। २४।।

यस्ते गन्धः पुरुषेषु स्त्रीषु पुंसु भगो रुचिः। यो अश्वेषु वीरेषु यो मृगेषूत हस्तिषु। कन्यायां वर्चो यद्भूमे तेनास्माँ अपि सं सृज मा नो द्विक्षत कश्चन।। २५।।

शिला भूमिरश्मा पांसुः सा भूमि संधृता धृता।
तस्यै हिरण्यवक्षसे पृथिव्या अकरं नमः।। २६।।

यस्यां वृक्षा वानस्पत्या ध्रुवास्तिष्ठन्ति विश्वहा।
पृथिवीं विश्वधायसं धृतामच्छा वदामसि।। २७।।

उदीराणा उतासीनास्तिष्ठन्तः प्रक्रामन्तः।
पद्भ्यां दक्षिणसव्याभ्यां मा व्यथिष्महि भूम्याम्।। २७।।

विमृग्वरीं पृथिवीमा वदामि क्षमां भूमिं ब्रह्मणा वावृधानाम्।
ऊर्जं पुष्टं बिभ्रतीमन्नभागं घृतं त्वाभि नि षीदेम भूमे।। २९।।

शुद्धा न आपस्तन्वे क्षरन्त यो नः सेदुरप्रिये तं नि दध्मः।
पवित्रेण पृथिवि मोत्पुनामि।। ३०।।

यास्ते प्राचीः प्रदिशो या उदीचीर्यास्ते भूमे अधराद्याश्च पश्चात्।
स्योनास्ता मह्यं चरते भवन्तु मानि पप्तं भुवने शिश्रियाणः।। ३१।।

मा नः पश्चान्मा पुरस्तान्नुदिष्ठा मोत्तरादधरादुत।
स्वस्ति भूमे नो भव मा विदन्परिपन्थिनो वरीयो यावया वधम्।। ३२।।

यावत्तेऽभि विपश्यामि भूमे सूर्येण मेदिना।
तावन्मे चक्षुर्मा मेष्ट उत्तरामुत्तरां समाम्।। ३३।।

यच्छयानः पर्यावर्ते दक्षिणं सव्यमभि भूमे पार्श्वम्। उत्तानास्त्वा प्रतीचीं यत्पृष्टीभिरधिशेमहे। मा हिंसीस्तत्र नो भूमे सर्वस्य प्रतिशीवरि।। ३४।।

यत्ते भूमे विखनामि क्षिप्रं तदपि रोहतु।
मा ते मर्म विमृग्वरि मा ते हृदयमर्पिपम्।। ३५।।

ग्रीष्मस्ते भूमे वर्षाणि शरद्धेमन्तः शिशिरो वसन्तः।
ऋतवस्ते विहिता हायनीरहोरात्रे पृथिवीं नो दुहाताम्।। ३६।।

याप सर्वं विजमाना विमृग्वरी यस्यामासन्नग्नयो ये अप्स्वन्तः परा दस्यून्ददती देवपीयूनिन्द्रं वृणाना पृथिवी वृत्रम्।
शक्राय दध्रे वृषभाय वृष्णे।। ३७।।

यस्यां सदोहविर्धाने यूपो यस्यां निमीयते। ब्रह्माणो यस्यामर्चन्त्यृग्भिः साम्ना यजुर्विदः। युज्यन्ते यस्यामृत्विजः सोममिन्द्राय पातवे।। ३८।।

यस्यां पूर्वे भूतकृत ऋषयो गा उदानृचुः।
सप्त सत्रेण वेधसो यज्ञेन तपसा सह।। ३९।।

सा नो भूमिरा दिशतु यद्धनं कामयामहे।
भगो अनुप्रयुङ्क्तामिन्द्र एतु परोगवः।। ४०।।

यस्यां गायन्ति नृत्यन्ति भूम्यां मर्त्या व्यैलबाः। युध्यन्ते यस्यामाक्रन्दो यस्यां वदति दुन्दुभिः। सा नो भूमिः प्र णुदतां सपत्नानसपत्नं मा पृथिवी कृणोतु।। ४१।।

यस्यामन्नं व्रीहियवौ यस्या इमाः पञ्च कृष्टयः।
भूम्यै पर्जन्यपत्न्यै नमोऽस्तु वर्षमेदसे।। ४२।।

यस्याः पुरो देवकृताः क्षेत्रे यस्या विकुर्वते।
प्रजापतिः पृथिवीं विश्वगर्भामाशामाशां रण्यां नः कृणोतु।। ४३।।

निधिं बिभ्रती बहुधा गुहा वसु मणिं हिरण्यं पृथिवी ददातु मे।
वसूनि नो वसुदा रासमाना देवी दधातु सुमनस्यमाना।। ४४।।

जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसम्।
सहस्रं धारा द्रविणस्य मे दुहां ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती।। ४५।।

यस्ते सर्पो वृश्चिकस्तृष्टदंश्मा हेमन्तजब्धो भृमलो गुहा शये।
क्रिमिर्जिन्वत्पृथिवी यद्यदेजषि प्रावृषि तन्नः सर्पन्मोपसृपद्यच्छिवं तेन नो मृड।। ४६।।

ये ते पन्थानो बहवो जनायना रथस्य वर्त्मानसश्च यातवे।
यैः सन्चरन्त्युभये भद्रपापास्तं पन्थानं जयेनानमित्रमतस्करं यच्छिवं तेन नो मृड।। ४७।।

मल्वं बिभ्रती गुरुभृद्भद्रपापस्य निधनं तितिक्षुः।
वराहेण पृथिवि संविदाना सूकराय वि जिहीते मृगाय।। ४८।।

ये त आरण्याः पशवो मृगा वने हिताः सिंहा व्याघ्राः पुरुषादश्चरन्ति
उलं वृकं पृथिवी दुच्छुनामित ऋक्षीकां रक्षो अप बाधयास्मत्।। ४९।।

ये गन्धर्वा अप्सरसो ये चारायाः किमीदिनः।
पिशाचान्त्सर्वा रक्षांसि तानस्मद्भूमे यावय।। ५०।।

यां द्विपादः पक्षिणः सम्पतन्ति हंसाः सुवर्णाः शकुना वयांसि। यस्यां वातो मातरिश्वेयते रजांसि कृण्वंश्च्यावयंश्च वृक्षान् वातस्य प्रवामुपवामनु वात्यर्चिः।। ५१।।

यस्यां कृष्णमरुणं च संहिते अहोरात्रे विहिते भूम्यामधि। वर्षेण भूमिः पृथिवी वृतावृता सा नो दधातु भद्रया प्रिये धामनिधामनि।। ५२।।

द्यौश्च मे इदं पृथिवी चान्तरिक्षं च मे व्यचः।
अग्निः सूर्य आपो मेधां विश्वे देवाश्च सं ददुः।। ५३।।

अहमस्मि सहमान उत्तरो नाम भूम्याम्।
अभीषाडस्मि विश्वाषाडाशामाशां विषासहिः।। ५४।।

अदो यद्देवि प्रथमाना पुरस्ताद्देवैरुक्ता व्यसर्पो महित्वम्।
आ त्वा सुभूतविशत्तदानीमकल्पयथाः प्रदिशश्चतस्रः।। ५५।।

ये ग्रामा यदरण्यं याः सभा अधि भूम्याम्।
ये संग्रामाः समितयस्तेषु चारु वदेम ते।। ५६।।

अश्वइव रजो दुधुवे वि ताञ्जनान्य आक्षिन्यपृथिवीं यादजायत।
मन्द्राग्रेत्वरी भुवनस्य गोपा वनस्पतीनां गृभिरोषधीनाम्।। ५७।।

यद्वदामि मधुमत्तद्वदामि यदीक्षे तद्वनन्ति मा।
त्विषीमानस्मि जूतिमानवान्यान्हन्मि दोधतः।। ५८।।

शन्तिवा सुरभिः स्योना कीलालोध्नी पयस्वती।
भूमिरधि ब्रवीतु मे पृथिवी पयसा सह।। ५९।।

यामन्वैच्छद्धविषा विश्वकर्मान्तरर्णवे रजसि प्रविष्टाम्।
भुजिष्यं पात्रं निहितं गुहा यदाविर्भोगे अभवन्मातृमद्भयः।। ६०।।

त्वमस्यावपनी जनानामदितिः कामदुघा पप्रथाना।
यत्त ऊनं तत्त आ पूरयाति प्रजापतिः प्रथमजा ऋतस्य।। ६१।।

उपस्थास्ते अनमीवा अयक्ष्मा अस्मभ्यं सन्तु पृथिवी प्रसूताः।
दीर्घं न आयुः प्रतिबुध्यमाना वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम।। ६२।।

भूमे मातर्नि धेहि मा भद्रया सुप्रतिष्ठितम्।
संविदाना दिवा कवे श्रियां मा धेहि भूत्याम्।। ६३।।

इति पृथिवीसूक्तम् अथर्ववेदस्य द्वादशे काण्डे प्रथमं सूक्तम्।

पत्रं नैव यदा करीरविटपे दोषो वसन्तस्य किम्,
नोलूकोऽप्यवलोकते यदि दिवा सूर्यस्य किं दूषणम्।
धारा नैव पतन्ति चातकमुखे मेघस्य किं दूषणम्,
यत्पूर्वं विधिना ललाटलिखितं तन्मार्जितुं कः क्षमः।।

यदि वसन्त ऋतु आने पर भी करीर के वृक्ष पर पत्ते नहीं फूटते तो इसमें वसन्त ऋतु का क्या दोष ? यदि उल्लू को दिन में दिखाई नहीं देता तो इसमें सूर्य का क्या अपराध ? यदि चातक के मुख में वर्षा की बूंदें नहीं पड़ती तो इसमें बादल का क्या दोष ? भाग्य में जो लिखा है उसे कौन मिटा सकता है ? (अर्थात् किया हुआ अवश्य भरना पड़ता है।)

अथ शान्ति-सूक्तम्

(अथर्ववेदस्य एकोनविंशतितमे काण्डे नवमं शान्ति सूक्तम्)

शान्ता द्यौः शान्ता पृथिवी शान्तमिदमुर्वन्तरिक्षम्।
शान्ता उदन्वतीरापः शान्ता न सन्त्वोषधीः।। १।।

शान्तानि पूर्वरूपाणि शान्तं नो अस्तु कृताकृतम्।
शान्तं भूतं च भव्यं च सर्वमेव शमस्तु नः।। २।।

इयं या परमेष्ठिनी वाग् देवी ब्रह्मसंशिता।
ययैव ससृजे घोरं तयैव शान्तिरस्तु नः।। ३।।

इदं यत् परमेष्ठिनं मनो वां ब्रह्मसंशितम्।
येनैव ससृजे घोरं तेनैव शान्तिरस्तु नः।। ४।।

इमानि यानि पञ्चेन्द्रियाणि मनः षष्ठानि मे हृदि ब्रह्मणा संशितानि।
यैरेव ससृजे घोरं तैरेव शान्तिरस्तु नः।। ५।।

शं नो मित्रः शं वरुणः शं विष्णुः शं प्रजापतिः।
शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो भवत्वर्यमा।। ६।।

शं न मित्रः शं वरुणः शं विवस्वाञ्छमन्तकः।
उत्पाताः पार्थिवान्तरिक्षाः शं नो दिविचरा ग्रहाः।। ७।।

शं नो भूमिर्वेप्यमाना शमुल्का निर्हतं च यत्।
शं गावो लोहितक्षीराः शं भूमिरव तीर्यतीः।। ८।।

नक्षत्रमुल्काभिहतं शमस्तु नः शं नोऽभिचाराः शमु सन्तु कृत्याः।
शं नो निखाता वल्गाः शमुल्का देशोपसर्गाः शमु नो भवन्तु।। ९।।

शं नो ग्रहाश्चान्द्रमसाः शमादित्यश्च राहुणा।
शं नो मृत्युर्धुमकेतुः शं रुद्रास्तिग्मतेजसः।। १०।।

शं रुद्राः शं वसवः शमादित्यः शमग्नयः।
शं नो महर्षयो देवाः शं देवाः शं बृहस्पतिः।। ११।।

ब्रह्म प्रजापतिर्धाता लोका वेदाः सप्त ऋषयोऽग्नयः।
तैर्मे कृतं स्वस्त्ययनमिन्द्रो मे शर्म यच्छतु ब्रह्मा मे शर्म यच्छतु विश्वे मे देवा शर्म यच्छन्तु सर्वे मे देवाः शर्म यच्छन्तु।। १२।।

यानि कानि चिच्छान्तानि लोके सप्तऋषयो विदुः।
सर्वाणि शं भवन्तु मे शं मे अस्त्वभयं मे अस्तु।। १३।।

पृथिवी शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिर्द्यौः शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिर्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे मे देवाः शान्तिः सर्वे मे देवाः शान्तिः शान्तिः शान्तिः शान्तिभिः। ताभिः शान्तिभिः सर्व शान्तिभिः शमयामोऽहं यदिह घोरं यदिह क्रूरं यदिह पापं तच्छान्तं तच्छिवं सर्वमेव शमस्तु नः।। १४।।

इति शान्तिसूक्तम्

अथर्ववेदस्य एकोनविंशतितमे काण्डे नवमं शान्ति सूक्तम्

छिन्नोपि रोहति तरुः क्षीणोप्युपचीयते पुनश्चन्द्रः।
इति विमृशन्तः सन्तः सन्तप्यन्ते न दुःखेषु।।

कट जाने पर भी वृक्ष फिर समय पाकर अंकुरित हो जाता है। क्षीण होने पर भी चन्द्रमा पुनः बढ़ता है। इसी प्रकार विचारशील सज्जन विपत्ति पड़ने पर दुःखी नहीं होते।

(जन्मदिन के मन्त्र)

यथा द्यौश्च पृथिवी च न बिभीतो न रिष्यतः। एवा मे प्राण मा बिभेः स्वाहा। इदं प्राणेभ्यः - इदन्न मम।। (अथर्व.२/१५/१)

यथाहश्च रात्री च न बिभीतो न रिष्यतः। एवा मे प्राण मा बिभेः स्वाहा। इदं प्राणेभ्यः - इदन्न मम।। (अथर्व.२/१५/२)

यथा सूर्यश्च चन्द्रश्च न बिभीतो न रिष्यतः। एवा मे प्राण मा बिभेः स्वाहा। इदं प्राणेभ्यः - इदन्न मम।। (अथर्व.२/१५/३)

यथा ब्रह्म च क्षत्रं च न बिभीतो न रिष्यतः। एवा मे प्राण मा बिभेः स्वाहा। इदं प्राणेभ्यः - इदन्न मम।। (अथर्व.२/१५/४)

यथा सत्यं चानृतं च न बिभीतो न रिष्यतः। एवा मे प्राण मा बिभेः स्वाहा। इदं प्राणेभ्यः - इदन्न मम।। (अथर्व.२/१५/५)

यथा भूतं च भव्यं च न बिभीतो न रिष्यतः। एवा मे प्राण मा बिभेः स्वाहा। इदं प्राणेभ्यः - इदन्न मम।। (अथर्व.२/१५/६)

प्राणापानौ मृत्योर्मा पातं स्वाहा।।
इदमात्मने - इदन्न मम।। (अथर्व.२/१६/१)

द्यावापृथिवी उपश्रुत्या मा पातं स्वाहा।।
इदमात्मने - इदन्न मम।। (अथर्व.२/१६/२)

सूर्य चक्षुषा मा पाहि स्वाहा।।
इदमात्मने - इदन्न मम।। (अथर्व.२/१६/३)

अग्ने वैश्वानर विश्वैर्मा देवैः पाहि स्वाहा।।
इदमात्मने - इदन्न मम।। (अथर्व.२/१६/४)

विश्वम्भर विश्वेन मा भरसा पाहि स्वाहा।।
इदमात्मने - इदन्न मम।। (अथर्व.२/१६/५)

ओजोऽस्योजो मे दाः स्वाहा।
इदमीश्वराय - इदन्न मम।। (अथर्व.२/१७/१)

सहोऽसि सहो मे दाः स्वाहा।
इदमीश्वराय - इदन्न मम।। (अथर्व.२/१७/२)

बलमसि बलं मे दाः स्वाहा।
इदमीश्वराय - इदन्न मम।। (अथर्व.२/१७/३)

आयुरस्यायुर्मे दाः स्वाहा।
इदमीश्वराय - इदन्न मम।। (अथर्व.२/१७/४)

श्रोत्रमसि श्रोत्रं मे दाः स्वाहा।
इदमीश्वराय - इदन्न मम।। (अथर्व.२/१७/५)

चक्षुरसि चक्षुर्मे दाः स्वाहा।
इदमीश्वराय - इदन्न मम।। (अथर्व.२/१७/६)

परिपाणमसि परिपाणं मे दाः स्वाहा।
इदमीश्वराय - इदन्न मम।। (अथर्व.२/१७/७)

यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह।
अग्निर्मा तत्र नयत्वग्निर्मेधा दधातु मे।
अग्नये स्वाहा - इदमग्नये - इदन्न मम।। (अथर्व.१९/४३/१)

यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह।
वायुर्मा तत्र नयतु वायुः प्राणान्दधातु मे।
वायवे स्वाहा - इदं वायये - इदन्न मम।। (अथर्व.१९/४३/२)

यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह।
सूर्यो मा तत्र नयतु चक्षुः सूर्यो दधातु मे।
सूर्याय स्वाहा - इदं सूर्याय - इदन्न मम।। (अथर्व.१९/४३/३)

यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह।
चन्द्रो मा तत्र नयतु मनश्चन्द्रो दधातु मे।
चन्द्राय स्वाहा - इदं चन्द्राय - इदन्न मम।। (अथर्व.१९/४३/४)

यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह।
सोमो मा तत्र नयतु पयः सोमो दधातु मे।
सोमाय स्वाहा - इदं सोमाय - इदन्न मम।। (अथर्व.१९/४३/५)

यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह।
इन्द्रो मा तत्र नयतु बलमिन्द्रो दधातु मे।
इन्द्राय स्वाहा - इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (अथर्व.१९/४३/६)

यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह।
आपो मा तत्र नयन्त्वमृतं मोप तिष्ठतु।
अद्भ्यः स्वाहा - इदमद्भ्यः - इदन्न मम।। (अथर्व.१९/४३/७)

यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह।
ब्रह्मा मा तत्र नयतु ब्रह्मा ब्रह्म दधातु मे।
ब्रह्मणे स्वाहा - इदं ब्रह्मणे - इदन्न मम।। (अथर्व.१९/४३/८)

अग्निर्माग्निनावतु प्राणायापानायायुषे वर्चस ओजसे तेजसे स्वस्तये सुभूतये स्वाहा। इदमग्नये - इदन्न मम।। (अथर्व.१९/४५/६)

इन्द्रो मेन्द्रियेणावतु प्राणायापानायायुषे वर्चस ओजसे तेजसे स्वस्तये सुभूतये स्वाहा। इदं सोमाय - इदन्न मम।। (अथर्व.१९/४५/७)

सोमो मा सौम्येनावतु प्राणायापानायायुषे वर्चस ओजसे तेजसे स्वस्तये सुभूतये स्वाहा। इदं सोमाय - इदन्न मम।। (अथर्व.१९/४५/८)

भगो मा भगेनावतु प्राणायापानायायुषे वर्चस ओजसे तेजसे स्वस्तये सुभूतये स्वाहा। इदं भगसे - इदन्न मम।। (अथर्व.१९/४५/९)

मरुतो मा गणैरवन्तु प्राणायापानायायुषे वर्चस ओजसे तेजसे स्वस्तये सुभूतये स्वाहा। इदं मरुद्भ्यः - इदन्न मम।। (अथर्व.१९/४५/१०)

उप प्रियं पनिप्नतं युवानमाहुतीवृधम्। अगन्म बिभ्रतो नमो दीर्घमायुः कृणोतु मे स्वाहा। इदमायुषे - इदन्न मम।। (अथर्व.७/३२/१)

इन्द्र जीव सूर्य जीव देवा जीवा जीव्यासमहम्। सर्वमायुर्जीव्यासम् स्वाहा।। इदमिन्द्रय - इदन्न मम।। (अथर्व.१९/७०/१)

आयुषायुष्कृतां जीवायुष्माञ्जीव मा मृथाः।
प्राणेनात्मन्वतां जीव मा मृत्योरुदगा वशं स्वाहा।।
इदं प्रजापतये - इदन्न मम।। (अथर्व.१९/२७/८)

जीवा स्थ जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम्। उपजीवा स्थोप जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम्। संजीवा स्थ सं जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम्। जीवला स्थ जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासं स्वाहा।। इदं विद्वद्भ्य - इदन्न मम।। (अथर्व.१९/६९/१-४)

तनूपाऽअग्नेऽसि तन्वं मे पाह्यायुर्दाऽअग्नेऽस्यायुर्मे देहि
वर्चोदाऽअग्नेऽसि वर्चो मे देहि। अग्ने यन्मे तन्वाऽऊनं तन्मऽआपृण स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। **(यजु. ३/१७)**

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् स्वाहा।। इदं रुद्राय - इदन्न मम।। (ऋग्.७/५९/१२)

पश्येम शरदः शतम्। जीवेम शरदः शतम्। बुध्येम शरदः शतम्। रोहेम शरदः शतम्। पूषेम शरदः शतम्। भवेम शरदः शतम्। भूयेम शरदः शतम्। भूयसीः शरदः शताम् स्वाहा।।
इदं सूर्याय - इदन्न मम।। (अथर्व.१९/६७/१-८)

(सूचना :- जन्मदिन में सिर्फ दूसरे के द्वारा बोलकर प्रत्येक से तीन-तीन आहुतियां दें)

अग्निरायुष्मान्त्स वनस्पतिभिरायुष्मांस्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि स्वाहा।। इदमायुष - इदन्न मम।।
(पारस्कर गृह्य. कां.१/क.१६/सू.६/१)

सोम आयुष्मान्त्स ओषधीभिरायुष्मांस्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि स्वाहा।। इदमायुष - इदन्न मम।। (पार. गृ. १/१६/६/२)

ब्रह्मा आयुष्मत्तद्ब्राह्मणैरायुष्मत्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि स्वाहा।। इदमायुष - इदन्न मम।। (पार. गृ. १/१६/६/३)

देवा आयुष्मन्तस्तेऽमृतेन आयुष्मन्तस्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि स्वाहा।। इदमायुष - इदन्न मम।। (पार. गृ. १/१६/६/४)

ऋषय आयुष्मन्तस्ते व्रतैरायुष्मन्तस्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि स्वाहा।। इदमायुष - इदन्न मम।। (पार. गृ. १/१६/६/५)

पितर आयुष्मन्तस्ते स्वधाभिरायुष्मन्तस्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि स्वाहा।। इदमायुष - इदन्न मम।। (पार. गृ. १/१६/६/६)

यज्ञ आयुष्मान्त्स दक्षिणाभिरायुष्मांस्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि स्वाहा।। इदमायुष - इदन्न मम।। (पार. गृ. १/१६/६/७)

समुद्र आयुष्मान्त्स स्रवन्तीभिरायुष्मांस्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि स्वाहा।। इदमायुष - इदन्न मम।। (पार. गृ. १/१६/६/८)

त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्। यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम् स्वाहा।। इदं रुद्राय - इदन्न मम।। (पार. गृ. १/१६/७) (यजु. ३/६२)

अभिवादनम्

ऊर्ध्वं प्राणा ह्युत्क्रामन्ति यूनः स्वविर आयति। प्रत्युत्थानाभिवादाभ्यां पुनस्तान् प्रतिपद्यते।। (मनु२/१२०) अर्थात् आयु या विद्या आदि की दृष्टि से बड़े मनुष्य के आने पर कम आयु या विद्यावाले के प्राण ऊपर की ओर गति करने लगते हैं। उसे थोड़ा उद्वेग सा प्रतीत होता है। तब उनके सामने खड़े होने से तथा उन्हें प्रणाम करने से वह अपने प्राणों को पूर्वावस्था में ले आता है।

लौकिकं वैदिकं वाऽपि तथाऽऽध्यात्मिकमेव च। आदतीत यतो ज्ञानं तं पूर्वमभिवादयेत्।। (मनु२/११७) मनुष्य, जिससे सांसारिक विषय का, वेद-विषय का अथवा अध्यात्म-विषय का ज्ञान प्राप्त करे, उससे पहले प्रणाम करे।

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः। चत्वारि तस्य वर्द्धन्त आयुर्विद्यायशोबलम्।। (मनु२/१२२) प्रणाम करने के स्वभाववाले और सदा वृद्धों की सेवा करनेवाले की आयु, विद्या, कीर्ति और बल ये चार वस्तुएँ बढ़ती हैं।

शय्यासनेऽध्याचरिते श्रेयसा न समाविशेत्। शय्याशनस्थश्चैवैनं प्रत्युत्थायाभिवादयेत्।। (मनु.२/११६) अपने से बड़े के द्वारा प्रयोग में लाए जाते हुए बिस्तर और आसन पर छोटा न लेटे, न बैठे। छोटा यदि बिस्तर या आसन पर बैठा हो और बड़ा आ जाए, तो उठकर उसे अभिवादन करे।

(आयुष्कामयज्ञः)

प्रमाण :- आत्मैकशततम... यजमान एकशतमः, आयुषीन्द्रिये वीर्ये तेजसि प्रतिष्ठितः। (ऐतरेयारण्यक आर्.१/ अ.२/ खं.२/) आरण्यककार ने सत्तानवे ऋचाओं में से आद्य और अन्त्य दो ऋचाओं की तीन-तीन बार आवृत्ति करके एक सौ एक (१०१) वर्ष पूरा किया है। इस प्रकार आयुष्य के सौ वर्ष पूरे कर उसके आगे पुरुष को 'एकशततम्' कहा है, जो सौ वर्ष की आयु में प्रतिष्ठित होता है।

त्रिकद्रुकेषु महिषो यवाशिरं तुविशुष्मस्तृपत्सोममपिबद्विष्णुना सुतं यथावशत्। स ईं ममाद महि कर्म कर्तवे महामुरुं सैनं सश्चद्देवो देवं सत्यमिन्द्रं सत्य इन्दुः स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद २/२२/१)

अधत्विषिमाँ अभ्योजसा क्रिविं युधाभवदा रोदसी अपृणदस्य मज्मना प्र वावृधे। अधत्तान्यं जठरे प्रेमरिच्यत सैनं सश्चद्देवो देवं सत्यमिन्द्रं सत्य इन्दुः स्वाहा।। इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद २/२२/२)

साकं जातः क्रतुना साकमोजसा ववक्षिथ साकं वृद्धो वीर्यैः सासहिर्मृधो विचर्षणिः। दाता राधः स्तुवते काम्यं वसु सैनं सश्चद्देवो देवं सत्यमिन्द्रं सत्य इन्दुः स्वाहा।
इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद २/२२/३)

एन्द्र याह्युप नः परावतो नायमच्छा विदाथानीव सत्पतिरस्तं राजेव सत्पतिः। हवामहे त्वा वयं प्रयस्वन्तः सुचे सचा। पुत्रासो न पितरं वाजसातये मंहिष्ठं वाजसातये स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १/१३०/१)

इन्द्राय हि द्यौरसुरो अनम्नतेन्द्राय मही पृथिवी वरीमभिर्द्युम्नसाता वरीमभिः। इन्द्रं विश्वे सजोषसो देवासो दधिरे पुरः। इन्द्राय विश्वा सवनानि मानुषा रातानि सन्तु मानुषा स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १/१३१/१)

प्रे ष्वस्मै पुरोरथमिन्द्राय शूषमर्चत। अभीके चिदु लोककृत्सङ्गे समत्सु वृत्रहास्माकं बोधि चोदिता। नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु स्वाहा।। इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १०/१३३/१)

आ त्वा रथं यथोतये सुम्नाय वर्तयामसि। तुविकुर्मिमृतीषहमिन्द्र शविष्ठ सत्पते स्वाहा।। इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ८/६८/१)

तुविशुष्म तुविक्रतो शचीवो विश्वया मते। आ पप्राथ महित्वना स्वाहा।। इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ८/६८/२)

यस्य ते महिना महः परि ज्मायन्तमीयतुः। हस्ता वज्रं हिरण्ययं स्वाहा।। इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ८/६८/३)

इदं वसो सुतमन्धः पिबा सुपूर्णमुदरम्। अनाभयिन्ररिमा ते स्वाहा।। इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ८/२/१)

नृभिर्धूतः सुतो अश्नैरव्यो वारैः परिपूतः। अश्वो न निक्तो नदीषु स्वाहा।। इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ८/२/२)

तं ते यवं यथा गोभिः स्वादुमकर्म श्रीणन्तः। इन्द्र त्वा स्मिन्त्सधमादे स्वाहा।। इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ८/२/३)

इन्द्र नेदीय एदिहि मितमेधाभिरूतिभिः।
आ शन्तम शन्तमाभिरभिष्टिभिरा स्वापे स्वापिभिः स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ८/५३/५)

आजितुरं सत्पतिं विश्वचर्षणिं कृधि प्रजास्वाभगम्।
प्र सू तिरा शचीभिर्ये त उक्थिनः क्रतुं पुनत आनुषक् स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ८/५३/६)

यस्ते साधिष्ठोऽवसे ते स्याम भरेषु ते।
वयं होत्राभिरुत देवहूतिभिः ससवांसो मनामहे स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ८/५३/७)

प्रैतु ब्रह्मणस्पतिः प्र देव्येतु सूनृता।
अच्छा वीरं नर्यं पङ्क्तिराधसं देवा यज्ञं नयन्तु नः स्वाहा।।
इदं बृहस्पतये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १/४०/३)

यो वाघते ददाति सूनरं वसु स धत्ते अक्षिति श्रवः।
तस्मा इळां सुवीरामा यजामहे सुप्रतूर्तिमनेहसं स्वाहा।।
इदं बृहस्पतये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १/४०/४)

प्र व इन्द्राय बृहते मरुतो ब्रह्मार्चत। वृत्रं हनति वृत्रहा शतक्रतुर्वज्रेण शतपर्वणा स्वाहा।। इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ८/८६/३)

सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे। जुहुमसि द्यवि द्यवि स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १/४/१)

उप नः सवना गहि सोमस्य सोमपाः पिब। गोदा इद्रेवतो मदः स्वाहा।। इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १/४/२)

बृहदिन्द्राय गायत मरुतो वृत्रहन्तमम्। येन ज्योतिरजनयन्नृतावृधो देवं देवाय जागृवि स्वाहा।। इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ८/८६/१)

प्र नूनं ब्रह्मणस्पतिर्मन्त्रं वदत्युक्थ्यम्।
यस्मिन्निन्द्रो वरुणा मित्रो अर्य्यमा देवा ओकांसि चक्रिरे स्वाहा।।
इदं बृहस्पतये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १/४०/५)

तमिद्वोचेमा विदथेषु शम्भुवं मन्त्रं देवा अनेहसम्।
इमां च वाचं प्रतिहर्यथा नरो विश्वेद्वामा वो अश्नवत् स्वाहा।।
इदं बृहस्पतये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १/४०/६)

नकिः सुदासो रथं पर्यास न रीरमत्।
इन्द्रो यस्याविता यस्य मरुतो गमत्स गोमति व्रजे स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ७/३२/१०)

अग्निर्नेता भगइव क्षितीनां दैवीनां देव ऋतुपा ऋतावा।
स वृत्रहा सनयो विश्ववेदाः पर्षद्विश्वाति दुरिता गृणन्तं स्वाहा।।
इदं विश्वेभ्यो देवेभ्यो - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ३/२०/४)

त्वं सोम क्रतुभिः सुक्रतुर्भूस्त्वं दक्षैः सुदक्षो विश्ववेदाः।
त्वं वृषा वृषत्वेभिर्महित्वा द्युम्नेभिर्द्युम्न्यभवो नृचक्षाः स्वाहा।।
इदं सोमाय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १/९१/२)

पिन्वन्त्यपो मरुतः सुदानवः पयो घृतवद्विदथेष्वा भुवः। अत्यं न मिहे वि नयन्ति वाजिनमुत्सं दुहन्ति स्तनयन्तमक्षितं स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १/६४/६)

असत्सु मे जरितः साभिवेगो यत्सुन्वते यजमानाय शिक्षम्।
अनाशीर्दामहमस्मि प्रहन्ता सत्यध्वृतं वृजिनायन्तमाभुं स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १०/२७/१)

यदीदहं युधये संनयान्यदेवयून्तन्वा३शूशुजानान्।
अमा ते तुम्रं वृषभं पचानि तीव्रं सुतं पञ्चदशं नि षिञ्चं स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १०/२७/२)

नाहं तं वेद य इति ब्रवीत्यदेवयून्त्समरणे जघन्वान्।
यदावाख्यत्समरणमृद्यावदादिद्ध मे वृषभा प्र ब्रुवन्ति स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १०/२७/३)

यदज्ञातेषु वृजनेष्वासं विश्वे सतो मघवानो म आसन्।
जिनामि वेत्क्षेम आ सन्तमाभुं प्र तं क्षिणां पर्वते पादगृह्य स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १०/२७/४)

न वा उ मां वृजने वारयन्ते न पर्वतासो यदहं मनस्ये।
मम स्वनात्कृधुकर्णो भयात एवेदनु द्यून्किरणः समेजात् स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १०/२७/५)

दर्शन्न्वत्र शृतपाँ अनिन्द्रान्बाहुक्षदः शरवे पत्यमानान्।
घृषुं वा ये निनिदुः सखायमध्यू न्वेषु पवयो ववृत्युः स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १०/२७/६)

अभूर्वौक्षीर्व्यु आयुरानड्दर्षन्नु पूर्वो अपरो नु दर्षत्।
द्वे पवस्ते परि तं न भूतो यो अस्य पारे रजसो विवेष स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १०/२७/७)

गावो यवं प्रयुता अर्यो अक्षन्ता अपश्यं सहगोपाश्चरन्तीः।
हवा इदर्यो अभितः समायन्कियदासु स्वपतिश्छन्दयाते स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १०/२७/८)

सं यद्वयं यवसादो जनानामहं यवाद उर्वज्रे अन्तः।
अत्रा युक्तोऽवसातारमिच्छादथो अयुक्तं युनजद्ववन्वान् स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १०/२७/९)

अत्रेदु मे मंससे सत्यमुक्तं द्विपाच्च यच्चतुष्पात्संसृजानि।
स्त्रीभिर्यो अत्र वृषणं पृतन्यादयुद्धो अस्य वि भजानि वेदः स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १०/२७/१०)

यस्यानक्षा दुहिता जात्वास कस्तां विद्वाँ अभि मन्याते अन्धाम्।
कतरो मेनिं प्रति तं मुचाते य ईं वहाते य ईं वा वरेयात् स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १०/२७/११)

कियती योषा मर्यतो वधूयोः परिप्रीता पन्यसा वार्येण।
भद्रा वधूर्भवति यत्सुपेशाः स्वयं सा मित्रं वनुते जने चित् स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १०/२७/१२)

पत्तो जगार प्रत्यञ्चमत्ति शीर्ष्णा शिरः प्रति दधौ वरूथम्।
आसीन ऊर्ध्वामुपसि क्षिणाति न्यङ्ङुत्तानामन्वेति भूमिं स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १०/२७/१३)

बृहन्नच्छायो अपलाशो अर्वा तस्थौ माता विषितो अत्ति गर्भः।
अन्यस्या वत्सं रिहती मिमाय कया भुवा नि दधे धेनुरूधः स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १०/२७/१४)

सप्त वीरासो अधरादुदायन्नष्टोत्तरात्तात्समजग्मिरन्ते। नव पश्चातात्स्थविमन्त आयन्दश प्राक्सानु वि तिरन्त्यश्नः स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १०/२७/१५)

दशानामेकं कपिलं समानं तं हिन्वन्ति क्रतवे पार्याय।
गर्भं माता सुधितं वक्षणास्ववेनन्तं तुषयन्ती बिभर्ति स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १०/२७/१६)

पीवानं मेषमपचन्त वीरा न्युप्ता अक्षा अनु दीव आसन्।
द्वा धनुं बृहतीमप्स्वतः पवित्रवन्ता चरतः पुनन्ता स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १०/२७/१७)

वि क्रोशनासो विष्वञ्च आयन्पचाति नेमो नहि पक्षदर्धः।
अयं मे देवः सविता तदाह द्रुवन्न इद्वनवत्सर्पिरन्नः स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १०/२७/१८)

अपश्यं ग्रामं वहमानमारादचक्रया स्वधया वर्तमानम्।
सिषक्त्यर्यः प्र युगा जनानां सद्यः शिश्ना प्रमिनानो नवीयान् स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १०/२७/१९)

एतौ मे गावौ प्रमरस्य युक्तौ मो षु प्र सेधीर्मुहुरिन्ममन्धि।
आपश्चिदस्य वि नशन्त्यर्थं सूरश्च मर्क उपरो बभूवान् स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १०/२७/२०)

अयं यो वज्रः पुरुधा विवृत्तोऽवः सूर्यस्य बृहतः पुरीषात्।
श्रव इदेना परो अन्यदस्ति तदव्यथी जरिमाणस्तरन्ति स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १०/२७/२१)

वृक्षेवृक्षे नियता मीमयद्गौस्ततौ वयः प्र पतान्पूरुषादः।
अथेदं विश्वं भुवनं भयात इन्द्राय सुन्वदृषये च शिक्षत् स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १०/२७/२२)

देवानां माने प्रथमा अतिष्ठन्कृन्तत्रादेषामुपरा उदायन्।
त्रयस्तपन्ति पृथिवीमनूपा द्वा बृबूकं वहतः पुरीषं स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १०/२७/२३)

सा ते जीवातुरुत तस्य विद्धि मा स्मैतादृगप गूहः समर्ये।
आविः स्वः कृणुते गूहते बुसं स पादुरस्य निर्णिजो न मुच्यते स्वाहा।। इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १०/२७/२४)

पिबा सोममभि यमुग्र तर्द ऊर्वं गव्यं महि गृणान इन्द्र।
वि यो धृष्णो वधिषो वज्र हस्त विश्वा वृत्रममित्रिया शवोभिः स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ६/१७/१)

स ईं पाहि य ऋजीषी तरुत्रो यः शिप्रवान्वृषभो यो मतीनाम्।
यो गोत्रभिद्वज्रभृद्यो हरिष्ठाः स इन्द्र चित्राँ अभि तृन्धि वाजान् स्वाहा।। इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ६/१७/२)

एवा पाहि प्रत्नथा मन्दतु त्वा श्रुधि ब्रह्म वावृधस्वोत गीर्भिः।
आविः सूर्यं कृणुहि पीपिहीषो जहि शत्रूँरभि गा इन्द्र तृन्धि स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ६/१७/३)

ते त्वा मदा बृहदिन्द्र स्वधाव इमे पीता उक्षयन्त द्युमन्तम्।
महामनूनं तवसं विभूतिं मत्सरासो जर्हृषन्त प्रसाहं स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ६/१७/४)

येभिः सूर्यमुषसं मन्दसानोऽवासयोऽप दृळ्हानि दर्द्रत्।
महामद्रिं परि गा इन्द्र सन्तं नुत्था अच्युतं सदसस्परि स्वात् स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ६/१७/५)

तव क्रत्वा तव तद्दंसनाभिरामासु पक्वं शच्या नि दीधः।
और्णोर्दुर उस्रियाभ्यो वि दृळ्होदूर्वाद्गा असृजो अङ्गिरस्वान् स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ६/१७/६)

पप्राथ क्षां महि दंसो व्युर्वीमुप द्यामृष्वो बृहदिन्द्र स्तभायः।
अधारयो रोदसी देवपुत्रे प्रत्ने मातरा यह्वी ऋतस्य स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ६/१७/७)

अध त्वा विश्वे पुर इन्द्र देवा एकं तवसं दधिरे भराय।
अदेवो यदभ्यौहिष्ट देवान्त्स्वर्षाता वृणत इन्द्रमत्र स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ६/१७/८)

अध द्यौश्चित्ते अप सा नु वज्राद् द्वितानमद्भियसा स्वस्य मन्योः।
अहि यदिन्द्रो अभ्योहसानं नि चिद्विश्वायुः शयथे जघान स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ६/१७/९)

अध त्वष्टा ते मह उग्र वज्रं सहस्रभृष्टिं ववृतच्छताश्रिम्।
निकाममरमणसं येन नवन्तमहिं सं पिणगृजीषिन् स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ६/१७/१०)

वर्धान्यं विश्वे मरुतः सजोषाः पचच्छतं महिषाँ इन्द्र तुभ्यम्।
पूषा विष्णुस्त्रीणि सरांसि धावन्वृत्रहणं मदिरमंशुमस्मै स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ६/१७/११)

आ क्षोदो महिवृतं नदीनां परिष्ठितमसृज ऊर्मिमपाम्।
तासामनु प्रवत इन्द्र पन्थां प्रार्दयो नीचीरपसः समुद्रं स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ६/१७/१२)

एवा ता विश्वा चकृवांसमिन्द्रं महामुग्रमजुर्य्यं सहोदाम्।
सुवीरं त्वा स्वायुधं सुवज्रमा ब्रह्म नव्यमवसे ववृत्यात् स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ६/१७/१३)

स नो वाजाय श्रवस इषे च राये धेहि द्युमत इन्द्र विप्रान्।
भरद्वाजे नृवत इन्द्र सूरीन्दिवि च स्मैधि पार्ये न इन्द्र स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ६/१७/१४)

अया वाजं देवहितं सनेम मदेम शतहिमाः सुवीरा स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ६/१७/१५)

कया शुभा सवयसः सनीळाः सामान्या मरुतः सं मिमिक्षुः।
कया मती कुत एतास एतेऽर्चन्ति शुष्मं वृषणो वसूया स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १/१६५/१)

कस्य ब्रह्माणि जुजुषुर्युवानः को अध्वरे मरुत आ ववर्त।
श्येनाँइव ध्रजतो अन्तरिक्षे केन महा मनसा रीरमाम स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १/१६५/२)

कुतस्वमिन्द्र माहिनः सन्नेको यासि सत्पते किं त इत्था।
सं पृच्छसे समराणः शुभानैर्वोचेस्तन्नो हरिवो यत्त अस्मे स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १/१६५/३)

ब्रह्माणि मे मतयः शं सुतासः शुष्म इयर्ति प्रभृतो मे अद्रिः।
आ शासते प्रति हर्यन्त्युक्थेमा हरी वहतस्ता नो अच्छ स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १/१६५/४)

अतो वयमन्तमेभिर्युजानाः स्वक्षत्रेभिस्तन्वः शुम्भमानाः।
महोभिरेताँ उप युज्महे न्विन्द्र स्वधामनु हि नो बभूथ स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १/१६५/५)

क्व स्या वो मरुतः स्वधासीद्यन्मामेकं समधत्ताहिहत्ये।
अहं ह्युग्रस्तविषस्तुविष्मान्विश्वस्य शत्रोरनमं वधस्नैः स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १/१६५/६)

भूरि चकर्थ युज्येभिरस्मे समानेभिर्वृषभ पौंस्येभिः।
भूरीणि हि कृणवामा शाविष्ठेन्द्र क्रत्वा मरुतो यद्वशाम स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १/१६५/७)

वधीं वृत्रं मरुत इन्द्रियेण स्वेन भामेन तविषो बभूवान्।
अहमेता मनवे विश्वश्चन्द्राः सुगा अपश्चकर वज्रबाहुः स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १/१६५/८)

अनुत्तमा ते मघवन्नकिर्नु न त्वावाँ अस्ति देवता विदानः।
न जायमानो नशते न जातो यानि करिष्या कृणुहि प्रवृद्ध स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १/१६५/९)

एकस्य चिन्मे विभ्वस्वोजो या नु दधृष्वान् कृणवै मनीषा।
अहं ह्युग्रो मरुतो विदानो यानि च्यवमिन्द्र इदीश एषां स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १/१६५/१०)

अमन्दन्मा मरुतः स्तोमो अत्र यन्मे नरः श्रुत्यं ब्रह्म चक्र।
इन्द्राय वृष्णे सुमखाय मह्यं सख्ये सखायस्तन्वे तनूभिः स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १/१६५/११)

एवेदेते प्रति मा रोचमाना अनेद्यः श्रव एषो दधानाः।
संचक्ष्यया मरुतश्चन्द्रवर्णा अच्छान्त मे छदयाथा च नूनं स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १/१६५/१२)

को न्वत्र मरुतो मामहे वः प्र यातन सखींरच्छा सखायः।
मन्मानि चित्रा अपिवातयन्त एषां भूत नवेदा म ऋतानां स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १/१६५/१३)

आ यद्दुवस्याद्दुवस्ये न कारुरस्माञ्चक्रे मान्यस्य मेधा।
ओ षु वर्त मरुतो विप्रमच्छेमा ब्रह्माणि जरिता वो अर्च्चत् स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १/१६५/१४)

एष वः स्तोमो मरुत इयं गीर्मान्दार्यस्य मान्यस्य कारोः।
एषा यासीष्ट तन्वे वयाँ विद्यामेषं वृजनं जीरदानुं स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १/१६५/१५)

मरुत्वाँ इन्द्र वृषभो रणाय पिबा सोममनुष्वधं मदाय।
आ सिञ्चस्व जठरे मध्व ऊर्मिं त्वं राजासि प्रदिवः सुतानां स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ३/४७/१)

सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान्।
जहि शत्रूँरप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ३/४७/२)

उत ऋतुभिर्ऋतुपाः पाहि सोममिन्द्र देवेभिः सखिभिः सुतं नः।
याँ आभजो मरुतो ये त्वान्वहन्वृत्रमदधुस्तुभ्यमोजः स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ३/४७/३)

ये त्वाहिहत्ये मघवन्नवर्धन्ये शाम्बरे हरिवो ये गविष्टौ।
ये त्वा नूनमनुमदन्ति विप्राः पिबेन्द्र सोमं सगणो मरुद्भिः स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ३/४७/४)

मरुत्वन्तं वृषभं वावृधानमकवारिं दिव्यं शासमिन्द्रम्।
विश्वासाहमवसे नूतनायोग्रं सहोदामिह तं हुवेम स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ३/४७/५)

जनिष्ठा उग्रः सहसे तुराय मन्द्र ओजिष्ठो बहुलाभिमानः।
अवर्धन्निन्द्रं मरुतश्चिदत्र माता यद्वीरं दधनद्धनिष्ठा स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १०/७३/१)

द्रुहो निषत्ता पृशनी चिदेवैः पुरू शंसेन वावृधुष्ट इन्द्रम्।
अभीवृतेव ता महापदेन ध्वान्तात्प्रपित्वादुदरन्त गर्भाः स्वाहा।। इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १०/७३/२)

ऋष्वा ते पादा प्र यज्जिगास्यवर्धन्वाजा उत ये चिदत्र।
त्वमिन्द्र सालावृकान्सहस्रमासन्दधिषे अश्विना ववृत्याः स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १०/७३/३)

समना तूर्णिरुप यासि यज्ञमा नासत्या सख्याय वक्षि।
वसाव्यमिन्द्र धारयः सहस्राश्विना शूर ददतुर्मघानि स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १०/७३/४)

मन्दमान ऋतादधि प्रजायै सखिभिरिन्द्र इषिरेभिरर्थम्।
आभिर्हि माया उप दस्युमागान्मिहः प्र तम्रा अवपत्तमांसि स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १०/७३/५)

सनामाना चिद् ध्वसयो न्यस्मा अवाहन्निन्द्र उषसो यथानः।
ऋष्वैरगच्छः सखिभिर्निकामैः साकं प्रतिष्ठा हृद्या जघन्थ स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १०/७३/६)

त्वं जघन्थ नमुचिं मखस्युं दासं कृण्वान ऋषये विमायम्।
त्वं चकर्थ मनवे स्योनान्पथो देवत्राञ्जसेव यानान् स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १०/७३/७)

त्वमेतानि पप्रिषे वि नामेशान इन्द्र दधिषे गभस्तौ।
अनु त्वा देवाः शवसा मदन्त्युपरिबुध्नान् वनिनश्चकर्थ स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १०/७३/८)

चक्रं यदस्याप्स्वा निषत्तमुतो तदस्मै मध्विच्चच्छद्यात्।
पृथिव्यामतिषितं यदूधः पयो गोष्वदधा ओषधीषु स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १०/७३/९)

अश्वादियायेति यद्वदन्त्योजसो जातमुत मन्य एनम्।
मन्योरियाय हर्म्येषु तस्थौ यतः प्रजज्ञ इन्द्रो अस्य वेद स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १०/७३/१०)

वयः सुपर्णा उप सेदुरिन्द्रं प्रियमेधा ऋषयो नाधमानाः।
अप ध्वान्तमूर्णुहि पूर्धि चक्षुर्मुमुग्ध्यस्मान्निधयेव बद्धान् स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १०/७३/११)

भ्रान्ति

गतसारेऽत्र संसारे सुखभ्रान्तिः शरीरिणाम्।
लालापानमिवाङ्गुष्ठे बालानां स्तन्यविभ्रमः।।

निस्सार से इस संसार में, प्रणियों को जो सुख की भ्रान्ति है, वह तो वैसी ही है जैसे अंगूठा मुख में रखकर अपनी लार का पान करनेवाले बालको को स्तन का पान करने की भ्रान्ति होती है।

(मृत्यु तथा दुःख विमोचन होम)

अग्निरैतु प्रथमो देवताना ँ सोऽस्यै प्रजां मुञ्चतु मृत्युपाशात्। तदय ँ राजा वरुणो ऽ नुमन्यतां यथेय ँ स्त्री पौत्रमघं न रोदात् स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (आश्व. गृह्य. १/१३/६)

इमामग्निस्त्रायतां गार्हपत्यः प्रजामस्यै नयतु दीर्घमायुः। अशून्योपस्था जीवतामस्तु माता पौत्रमानन्द मभिविबुध्यतामिय ँ स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (आश्व. गृह्य.)

स्वस्ति नोऽग्ने दिवा पृथिव्या विश्वानि धेह्य यथा यजत्र। यदस्यां मयि दिवि जातं प्रशस्तं तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्र ँ स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।।

सुगन्नु पन्था प्रदिशन्न एहि ज्योतिष्मद्धे ह्यजरन्न आयुः।
अपैतु मृत्युरमृतं म आगाद् वैवस्वतो नो अभयं कृणोतु स्वाहा।।
इदं वैवस्वताय - इदन्न मम।। (पार. गृ. कां. १, कं. ५, ११)

परं मृत्योऽअनु परेहि पन्थां यत्र नो अन्य इतरो देवयानात्।
चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजा ँ रीरिषो मोतवीरान्त्स्वाहा।।
इदं मृत्यवे - इदन्न मम।। (पार. गृ. कां. १, कं. ५, १२)

द्यौस्ते पृष्ठ ँ रक्षतु वायुरूरू अश्विनौ च स्तनन्धयस्ते पुत्रान्त्सविता-भिरक्षत्वावाससः परिधानाद् बृहस्पतिर्विश्वे देवा अभिरक्षन्तु पश्चात् स्वाहा।। इदं विश्वेभ्यः देवेभ्यः - इदन्न मम।। (मं. ब्रा.१/१/१२)

मा ते गृहेषु निशि घोष उत्थादन्यत्र त्वद्रुदत्यः संविशन्तु। मा त्वं रुदत्युर आवधिष्ठा जीवपत्नी पतिलोके विराज पश्यन्ती प्रजा ँ सुमनस्यमाना ँ स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (मं. ब्रा.१/१/१३)

अप्रजस्यं पौत्रमर्त्यपाप्मानमुत वा ऽ अघम्। शीर्ष्णस्रजमिवान्मुच्य द्विषद्भ्यः प्रतिमुञ्चामि पाश ँ स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (मं. ब्रा.१/१/१४)

(समृद्धिफलाय)

प्रमाण :- प्र वो देवानाग्नय इति राद्धिकामः इति।। (ऐतरेयारण्यक आर.१/अध्या.१/खण्ड१/सू.४) समृद्धि की कामना करनेवाले को "प्र वो देवाग्नये" (ऋग्वेद ३/१३/१-७) सूक्त का आज्यशस्त्र करना चाहिए।

प्र वो देवायाग्नये बर्हिष्ठमर्चास्मै। गमद्देवेभिरा स नो यजिष्ठो बर्हिरा सदत्।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ३/१३/१)

ऋतावा यस्य रोदसी दक्षं सचन्त ऊतयः। हविष्मन्तस्तमीळते तं सनिष्यन्तोऽवसे स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ३/१३/२)

स यन्ता विप्र एषां स यज्ञानामथा हि षः। अग्निं तं वो दुवस्यत दाता यो वनिता मघम् स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ३/१३/३)

स नः शर्माणि वीतयेऽग्निर्यच्छतु शन्तमा। यतो नः प्रुष्णवद्वसु दिवि क्षितिभ्यो अप्स्वा स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ३/१३/४)

दीदिवांसमपूर्व्यं वस्वीभिरस्य धीतिभिः। ऋक्वाणो अग्निमिन्धते होतारं विश्पतिं विशां स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ३/१३/५)

उत नो ब्रह्मन्नविष उक्थेषु देवहूतमः। शं नः शोचा मरुद् वृधोऽग्ने सहस्र सातमः स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ३/१३/६)

नू नो रास्व सहस्रवत्तोकवत् पुष्टिमद्वसु। द्युमदग्ने सुवीर्यं वर्षिष्ठमनुपक्षितं स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ३/१३/७)

न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः। (कठ. 1/27)
मनुष्य कभी धन से तृप्त नहीं हो सकता।

(पुष्टिहेतुत्वम्)

प्रमाण :- पुटिर्वै विशः पुष्टिमान्भवतीति।। (ऐतरेयारण्यक आर.१/अध्या.१/खण्ड१/सू.६) ऋग्वेद ८/७४/१ इस सूक्त के आज्यशस्त्र के प्रयोग से यजमान पुष्टिमान् होता है। (विशेष :- इस सूक्त से हवन में पहले दूसरा तृच् ४-६ पढ़ें।)

विशोविशो वो अतिथिं वाजयन्तः पुरुप्रियम्।
अग्निं वो दुर्यं वचः स्तुषे शूषस्य मन्मभिः स्वाहा।।
इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ८/७४/१)

यं जनासो हविष्मन्तो मित्रं न सर्पिरासुतिम्। प्रशंसन्ति प्रशस्तिभिः स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ८/७४/२)

पन्यासं जातवेदसं यो देवतात्युद्यता। हव्यान्यैरयद्दिवि स्वाहा।।
इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ८/७४/३)

आगन्म वृत्रहन्तमं ज्येष्ठमग्निमानवम्। यस्य श्रुतर्वा बृहन्नार्क्षो अनीक एधते स्वाहा।। इदमात्मने - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ८/७४/४)

अमृतं जातवेदसं तिरस्तमांसि दर्शतम्। घृताहवनमीड्यं स्वाहा।।
इदमात्मने - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ८/७४/५)

सबाधो यं जना इमेऽग्निं हव्येभिरीळते। जुह्वानासो यतस्रुचः स्वाहा।।
इदमात्मने - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ८/७४/६)

इयं ते नव्यसी मतिरग्ने अधाय्यस्मदा। मन्द्र सुजात सुक्रतोऽमूर दस्मातिथे स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ८/७४/७)

सा ते अग्ने शन्तमा चनिष्ठा भवतु प्रिया। तया वर्धस्व सुष्टुतः स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ८/७४/८)

सा द्युम्नैर्द्युम्निनी बृहदुपोप श्रवसि श्रवः। दधीत वृत्रतूर्ये स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ८/७४/९)

अश्वमिद्गां रथप्रां त्वेषमिन्द्रं न सत्पतिम्।
यस्य श्रवांसि तूर्वथ पन्यम्पन्यञ्च कृष्टयः स्वाहा।।
इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ८/७४/१०)

यं त्वा गोपवनो गिरा चनिष्ठदग्ने अंगिरः। स पावक श्रुधी हवं स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ८/७४/११)

यं त्वा जनास ईळते सबाधो वाजसातये स बोधि वृत्रतूर्ये स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ८/७४/१२)

अहं हुवान आर्क्षे श्रुतर्वणि मदच्युति। शर्धांसीव स्तुकाविनां मृक्षा शीर्षा चतुर्णां स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ८/७४/१३)

मां चत्वार आशवः शविष्ठस्य द्रवित्नवः। सुरथासो अभि प्रयो वक्षन्वयो न तुग्र्यं स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ८/७४/१४)

सत्यमित्त्वा महेनदी परुष्ण्यव देदिशम्। नेमापो अश्वदातरः शविष्ठादस्ति मर्त्यः स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ८/७४/१५)

तमेव विदित्वाऽति मृत्युमेति। (यजु. 31/18)

परमेश्वर को जानकर ही दुःखदायी मृत्यु से छूट सकते हैं।

(कीर्तिफलायाज्यशस्त्र)

प्रमाण :- अबोध्यग्निः समिधा जनानामिति कीर्तिकामः इति।। (ऐतरेयारण्यक आर.१/ अ.१/ ख.१/ सू.१५) कीर्ति, यश की कामना करनेवाले को 'अबोध्यग्निः' (ऋग्.५/१/१) इस सूक्त का आज्यशस्त्र करना चाहिए।

अबोध्यग्निः समिधा जनानां प्रति धेनुमिवायतीमुषासम्।
यह्वा इव प्र वयामुज्जिहानाः प्र भानवः सिस्रते नाकमच्छ स्वाहा।।
इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ५/१/१)

अबोधि होता यजथाय देवानूर्ध्वो अग्निः सुमनाः प्रातरस्थात्। समिद्धस्य रुशददर्शि पाजो महान्देवस्तमसो निरमोचि स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ५/१/२)

यदी गणस्य रशनामजीगः शुचिरङ्क्ते शुचिभिर्गोभिरग्निः। आद्दक्षिणा युज्यते वाजयन्त्युत्तानामूर्ध्वो अधयज्जुहूभिः स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ५/१/३)

अग्निमच्छा देवयतां मनांसि चक्षूंषीव सूर्ये सञ्चरन्ति। यदीं सुवाते उषसा विरूपे श्वेतो वाजी जायते अग्रे अह्नां स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ५/१/४)

जनिष्ट हि जेन्यो अग्रे अह्नां हितो हितेष्वरुषो वनेषु। दमेदमे सप्त रत्ना दधानोऽग्निर्होता नि षसादा यजीयान् स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ५/१/५)

अग्निर्होता न्यसीदद्यजीयानुपस्थे मातुः सुरभा उ लोके।
युवा कविः पुरुनिःष्ठ ऋतावा धर्ता कृष्टीनामुत मध्य इद्धः स्वाहा।।
इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ५/१/६)

प्र णु त्यं विप्रमध्वरेषु साधुमग्निं होतारमीळते नमोभिः। आ यस्ततान रोदसि ऋतेन नित्यं मृजन्ति वाजिनं घृतेन स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ५/१/७)

मार्जाल्यो मृज्यते स्वे दमूनाः कविप्रशस्तो अतिथिः शिवो नः। सहस्रशृङ्गो वृषभस्तदोजा विश्वाँ अग्ने सहसा प्रास्यन्यान् स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ५/१/८)

प्र सद्यो अग्ने अत्येष्यन्यानाविर्यस्मै चारुतमो बभूथ। ईळेन्यो वपुष्यो विभावा प्रियो विशामतिथिर्मानुषीणाम् स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ५/१/९)

तुभ्यं भरन्ति क्षितयो यविष्ठ बलिमग्ने अन्तित ओत दूरात्।
आ भन्दिष्ठस्य सुमतिं चिकिद्धि बृहत्ते अग्ने महि शर्म भद्रं स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ५/१/१०)

आद्य रथं भानुमो भानुमन्तमग्ने तिष्ठ यजतेभिः समन्तम्। विद्वान्पथीनामुर्वन्तरिक्षमेह देवान्हविरद्याय वक्षि स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ५/१/११)

अवोचाम कवये मेध्याय वचो वन्दारु वृषभाय वृष्णे गविष्ठिरो नमसा स्तोममग्नौ दिवीव रुक्ममुरुव्यञ्चमश्रेत् स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ५/१/१२)

उद्यानं ते पुरुष नावयानम्। (अथर्व. 8/1/6)
हे मनुष्य तेरी गति उन्नति के लिए हो, अवनति के लिए नहीं।

(महानाम्निसंज्ञका मन्त्राः = धन एवं विजय हेतु)

विदा मघवन् विदा गातुमनुशंसिषो दिशः। शिक्षा शचीनां पते पूर्वीणां पुरुवसो स्वाहा।। इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (सामवेद ६४१)

आभिष्ट्वामभिष्टिभिः स्वाऽ३र्न्नांशुः। प्रचेतन प्रचेतयेन्द्र द्युम्नाय न इषे स्वाहा।। इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (सामवेद ६४२)

एवा हि शक्रो राये वाजाय वज्रिवः। शविष्ठ वज्रिन्नृञ्जसे।
मंहिष्ठ वज्रिन्नृञ्जस आ याहि पिब मत्स्व स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (सामवेद ६४३)

विदा राये सुवीर्यं भुवो वाजानां पतिर्वशाँ अनु।
मंहिष्ठ वज्रिन्नृञ्जसे यः शविष्ठः शूराणां स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (सामवेद ६४४)

यो मंहिष्ठो मघोनामंशुर्न शोचिः। चिकित्वो अभि नो नयेन्द्रो विदे तमु स्तुहि स्वाहा।। इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (सामवेद ६४५)

ईशे हि शक्रस्तमूतये हवामहे जेतारमपराजितम्।
स नः स्वर्षदति द्विषः क्रतुश्छन्द ऋतं बृहत् स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (सामवेद ६४६)

इन्द्रं धनस्य सातये हवामहे जेतारमपराजितम्।
स नः स्वर्षदति द्विषः। स नः स्वर्षदति द्विषः स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (सामवेद ६४७)

पूर्वस्य यत्ते अद्रिर्वोऽशुर्मदाय। सुम्न आ धेहि नो वसो पूर्तिः शविष्ठ शस्यते। वशी हि शक्रो नूनं तन्नव्यं संन्यसे स्वाहा।। इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (सामवेद ६४८)

प्रभो जनस्य वृत्रहन्त्समर्येषु ब्रवावहै। शूरो यो गोषु गच्छति सखा सुशेवो अद्वयुः स्वाहा।। इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (सामवेद ६४९)

एवाह्येऽ३ऽ३ऽ३व। एवा ह्यग्ने। एवा हीन्द्र एवा हि पूषन्। एवा हि देवाः।
ओं एवा हि देवाः स्वाहा। इदमिन्द्राय - इदन्न मम।

(अन्नाद्यफलाय)

प्रमाण :- अग्निं नरे दीधितिभिररण्योरित्यन्नाद्यकाम, इति (ऐतरेयारण्य आर्.१/ अ.१/ खं.२/ सू.१) अन्नाद्य की कामना करनेवाले को **"अग्निं नरो दीधितिभिररण्योः ..."** (ऋग्वेद ७/१/१) सूक्त से आज्यशस्त्र करना चाहिए।

अग्निं नरो दीधितिभिररण्योर्हस्तच्युती जनयन्त प्रशस्तम्। दूरेदृशं गृहपतिमथयुम् स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ७/१/१)

तमग्निमस्ते वसवो न्यृण्वन्त्सुप्रतिचक्षमवसे कुतश्चित्। दक्षाय्यो यो दम आस नित्यः स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ७/१/२)

प्रेद्धो अग्ने दीदिहि पुरो नोऽजस्रया सूर्म्या यविष्ठ त्वां शश्वन्त उप यन्ति वाजाः स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ७/१/३)

प्र ते अग्नयोऽग्निभ्यो वरं निः सुवीरासः शोशुचन्तः द्युमन्तः।
यत्रा नरः समासते सुजाताः स्वाहा।।
इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ७/१/४)

दा नो अग्ने धिया रयिं सुवीरं स्वपत्यं सहस्य प्रशस्तम्। न यं यावा तरति यातुमावान् स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ७/१/५)

उप यमेति युवतिः सुदक्षं दोषा वस्तोर्हविष्मती घृताची। उप स्वैनमरमतिर्वसूयुः स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ७/१/६)

विश्वा अग्नेऽप दहारातीर्येभिस्तपोभिरदहो जरूथम्। प्र निस्वरं चातयस्वामीवाम् स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ७/१/७)

आ यस्ते अग्न इधते अनीकं वसिष्ठ शुक्र दीदिवः पावक।
उतो न एभिः स्तवथैरिह स्याः स्वाहा।।
इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ७/१/८)

वि ये ते अग्ने भेजिरे अनीकं मर्त्ता नरः पित्र्यासः पुरुत्रा।
उतो न एभिः सुमना इह स्याः स्वाहा।।
इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ७/१/९)

इमे नरो वृत्रहत्येषु शूरा विश्वा अदेवीरभि सन्तु मायाः। ये मे धियं पनयन्त प्रशस्ताम् स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ७/१/१०)

मा शूने अग्ने नि षदाम नृणां माशेषसोऽवीरता परि त्वा। प्रजावतीषु दुर्यासु दुर्य स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ७/१/११)

यमश्वी नित्यमुपयाति यज्ञं प्रजावन्तं स्वपत्यं क्षयं नः। स्वजन्मना शेषसा वावृधानम् स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ७/१/१२)

पाहि नो अग्ने रक्षसो अजुष्टात्पाहि धूर्तेररुषो अघायोः। त्वा युजा पृतनायूँरभि ष्याम् स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ७/१/१३)

सेदग्निरग्नीरँत्यस्त्वन्यान्यत्र वाजी तनयो वीळुपाणिः। सहस्रपाथा अक्षरा समेति स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ७/१/१४)

सेदग्निर्यो वनुष्यतो निपाति समेद्धारमंहस उरुष्यात्। सुजातासः परि चरन्ति वीराः स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ७/१/१५)

अयं सो अग्निराहुतः पुरुत्रा यमीशानः समिदिन्धे हविष्मान्। परि यमेत्यध्वरेषु होता स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ७/१/१६)

त्वे अग्न आहवनानि भूरीशानास आ जुहुयाम नित्या। उभा कृण्वन्तो वहतू मियेधे स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ७/१/१७)

इमे अग्ने वीततमानि हव्याऽजस्रो वक्षि देवतातिमच्छ। प्रति न ईं सुरभीणि व्यन्तु स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ७/१/१८)

मा नो अग्नेऽवीरते परा दा दुर्वाससेऽमतये मा नो अस्यै। मा नः क्षुधे मा रक्षस ऋतावो मा नो दमे मा वन आ जुहूर्थाः स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ७/१/१९)

नू मे ब्रह्माण्यग्न उच्छशाधि त्वं देव मघवद्भ्यः सुषूदः।
रातौ स्यामोभयास आ ते यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः स्वाहा।।
इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ७/१/२०)

त्वमग्ने सुहवो रण्वसन्दृक्सुदीति सूनो सहसो दिदीहि।
मा त्वे सचा तनये नित्य आ धङ्मा वीरो अस्मन्नर्यो वि दासीत् स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ७/१/२१)

मा नो अग्ने दुर्भृतये सचैषु देवेद्धेष्वग्निषु प्र वोचः।
मा ते अस्मान्दुर्मतयो भृमाचिद्देवस्य सूनो सहसो नशन्त स्वाहा।।
इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ७/१/२२)

स मर्तो अग्ने स्वनीक रेवानमर्त्ये य आजुहोति हव्यम्।
स देवता वसुवनिं दधाति य सूरिरर्थी पृच्छमान एति स्वाहा।।
इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ७/१/२३)

महो नो अग्ने सुवितस्य विद्वान्रयिं सूरिभ्य आ वहा बृहन्तम्।
येन वयं सहसावन्मदेमाविक्षितास आयुषा सुवीराः स्वाहा।।
इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ७/१/२४)

न मे ब्रह्माण्यग्न उच्छशाधि त्वं देव मघवद्भ्यः सुषूदः।
रातौ स्यामोभयास आ ते यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः स्वाहा।।
इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ७/१/२५)

(प्रजापशुकामः)

प्रमाण :- होताऽजनिष्ट चेतन इति प्रजापशुकामः, इति (ऐतरेयारण्यक आर्.१/ अ.१/ खं.१/ सू.१६) सन्तान, गो, अश्वादि पशु की कामना करनेवाले को **"होताजनिष्ट चेतनः ..."** (ऋग्वेद २/५/१) सूक्त से आज्यशस्त्र करना चाहिए।

होताजनिष्ट चेतनः पिता पितृभ्यः ऊतये। प्रयक्षज्रूजेन्यं वसु शकेम वाजिनो यमं स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद २/५/१)

आ यस्मिन्सप्त रश्मयस्तता यज्ञस्य नेतरि। मनुष्वद्दैव्यमष्टमं पोता विश्वं तदिन्वति स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद २/५/२)

दधन्वे वा यदीमनु वोचद् ब्रह्माणि वेरु तत्। परि विश्वानि काव्या नेमिश्चक्रमिवाभवत् स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद २/५/३)

साकं हि शुचिना शुचिः प्रशास्ता क्रतुनाजनि। विद्वाँ अस्य व्रता ध्रुवा वया इवानु रोहते स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद २/५/४)

ता अस्य वर्णमायुवो नेष्टुः सचन्त धेनवः।
कुवित्तिसृभ्य आ वरं स्वसारो या इदं ययुः स्वाहा।।
इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद २/५/५)

यदी मातुरुप स्वसा घृतं भरन्त्यस्थित। तासामध्वर्युरागतौ यवो वृष्टीव मोदते स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद २/५/६)

स्वः स्वाय धायसे कृणुतामृत्विगृत्विजम्। स्तोमं यज्ञं चादरं वनेमा ररिमा वयं स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद २/५/७)

यथा विद्वाँ अरङ्करद्विश्वेभ्यो यजतेभ्यः। अयमग्ने त्वे अपि यं यज्ञज्रचकृमा वयं स्वाहा।। इदमग्नये - इदन्न मम।। (ऋग्वेद २/५/८)

(गौरी सम्बन्धित मन्त्राः)

गौरीर्मिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी। अष्टापदी नवपदी बभूवुषी सहस्राक्षरा परमे व्योमन् स्वाहा।।
इदं विश्वेभ्यः देवेभ्यः - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १/१६४/४१)

स्वादोरित्थ विषूवतो मध्व पिबन्ति गौर्यः या इन्द्रेण सयावरीर्वष्णा मदन्ति शोभसे वस्वीरनु स्वराज्यं स्वाहा।।
इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १/८४/१०, अथ. २०/१०६/१)

मदच्युत्क्षेति सादने सिन्धोरूर्मा विपश्चित्। सोमो गौरी अधि श्रितः स्वाहा।। इदं पवमानाय सोमाय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ९/१२/३)

यथा हत्यद्वसवो गौर्यं चित्पदि षिताममुञ्चता यजत्राः।
एवो ष्व स्मन्मुञ्चता व्यंहः प्र तार्यग्ने प्रतरं न आयुः स्वाहा।।
इदं विश्वेभ्यः देवेभ्यः - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १०/१२६/८)

यथा ह त्यद्वसवो गौर्यं चित्पदि षिताममुञ्चता यजत्राः। एवो ष्व स्मन्मुञ्चता व्यंहः प्र तार्यग्ने प्रतरं न आयुः स्वाहा।। इदं विश्वेभ्यः देवेभ्यः - इदन्न मम।। (ऋग्वेद ४/१२/६)

सन्तोषामृततृप्तानां यत्सुखं शान्तचेतसाम्।
कुतस्तद्धनलुब्धानामितश्चेतश्च धावताम्।।

(हितोपदेश मित्रलाभः १४३)

सन्तोषरूपी अमृत से तृप्त हुए शान्त चित्तवाले मनुष्यों को जो सुख होता है, वह सुख धन के लोभी और इधर-उधर निरन्तर भाग-दौड़ करनेवालों को कहाँ ?

(गणपति सम्बन्धित मन्त्राः)

गणानां त्वा गणपति ꣳ हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम् स्वाहा।। इदं ब्रह्मणस्पतये - इदं न मम।। इदं विश्वेभ्यः देवेभ्यः - इदन्न मम।। (ऋग्वेद २/२३/१)

नि षु सीद गणपते गणेषु त्वामाहुर्विप्रतमं कवीनम्। न ऋते त्वत्क्रियते किं चनारे महामर्कं मघवञ्चित्रमर्च स्वाहा।। इदमिन्द्राय - इदन्न मम।। (ऋग्वेद १०/११२/९)

प्रतूर्वन्नेह्यवक्रामन्नशस्ती रुद्रस्य गाणपत्यं मयोभूरेहि। उर्वन्तरिक्षं वीहि स्वस्तिगव्यूतिरभयानि कृण्वन् पूष्ण सयुजा सह स्वाहा।। इदं गणपतये - इदन्न मम।। (यजुर्वेद ११/१५)

नमो गणेभ्य गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः स्वाहा।। इदं रुद्राय - इदन्न मम।। (यजुर्वेद १६/२५)

असवे स्वाहा वसवे स्वाहा विभुवे स्वाहा विवस्वते स्वाहा गणश्रिये स्वाहा गणपतये स्वाहाभिभुवे स्वाहाधिपतये स्वाहा शूषाय स्वाहा स ꣳ सर्पाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा मलिम्लुचाय स्वाहा दिवा पतयते स्वाहा।। इदं वसवे - इदन्न मम।। (यजुर्वेद २२/३०)

गणानां त्वा गणपति ꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ꣳ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् स्वाहा।। इदं गणपतये - इदन्न मम।। (यजुर्वेद २३/१९)

अथ सरस्वती देवताक मन्त्राः ऋग्वेदीयाः

पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धियावसुः।। १।।

चोदयित्री सूनृतानां चेतन्ती सुमतीनाम्। यज्ञं दधे सरस्वती।। २।।

महो अर्णः सरस्वती प्र चेतयति केतुना। धियो विश्वा वि राजति।। ३।।
(ऋ.१/३/१०-१२)

सरस्वती साधयन्ती धियं न इळा देवी भारती विश्वतूर्तिः। तिस्रो देवीः स्वधया बर्हिरेदमच्छिद्रं पान्तु शरणं निषद्य।। ४।। (ऋ.२/३/८)

सरस्वति त्वमस्माँ अविड्ढि मरुत्वती धृषती जेषि शत्रून्। त्यं चिच्छर्धन्तं तविषीयमाणमिन्द्रो हन्ति वृषभं शण्डिकानाम्।। ५।। (ऋ.२/३०/८)

अम्बितमे नदीतमे देवितमे सरस्वति।
अप्रशस्ताइव स्मसि प्रशस्तिमम्ब नस्कृधि।। ६।।

त्वे विश्वा सरस्वति श्रितायूंषि देव्याम्।
शुनहोत्रेषु मत्स्व प्रजां देवी दिदिड्ढि नः।। ७।।

इमा ब्रह्म सरस्वति जुषस्व वाजिनीवति। या ते मन्म गृत्समदा ऋतावरि प्रिया देवेषु जुह्वति।। ८।। (ऋ.२/४१/१६-१८)

इयमददाद्रभसमृणच्युतं दिवोदासं वध्र्यश्वाय दाशुषे।
या शश्वन्तमाचखादावसं पणिं ता ते दात्राणि तविषा सरस्वती।। ९।।

इयं शुष्मेभिर्बिसखा इवारुजत्सानु गिरीणां तविषेभिरूर्मिभिः।
पारावतघ्नीमवसे सुवृक्तिभिः सरस्वतीमा विवासेम धीतिभिः।। १०।।

सरस्वती देवनिदो नि बर्हय प्रजां विश्वस्य बृसयस्य मायिनः।
उत क्षितिभ्योऽवनीरविन्दो विषमेभ्यो अस्रवो वाजिनीवति।। ११।।

प्र णो देवी सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती।
धीनामवित्र्यवतु।। १२।।

यस्त्वा देवी सरस्वत्युपब्रूते धने हिते।
इन्द्रं न वृत्रतूर्ये।। १३।।

त्वं देवि सरस्वत्यवा वाजेषु वाजिनी।
रदा पूषेव नः सनिम्।। १४।।

उत स्या नः सरस्वती घोरा हिरण्यवर्तनिः।
वृत्रघ्नी वष्टि सुष्टुतिम्।। १५।।

उत नः प्रिया प्रियासु सप्तस्वसा सुजुष्टा।
सरस्वती स्तोम्या भूत्।। १६।।

आपप्रुषी पार्थिवान्युरु रजो अन्तरिक्षम्।
सरस्वती निदस्पातु।। १७।।

प्र या महिम्ना महिनासु चेकिते द्युम्नेभिरन्या अपसामपस्तमा।
रथ इव बृहती विभ्वने कृतोपस्तुत्या चिकितुषा सरस्वती।। १८।।

सरस्वत्यभि नो नेषि वस्यो माप स्फरीः पयसा मा न आ धक्।
जुषस्व नः सख्या वेश्या च मा त्वत्क्षेत्राण्यरणानि गन्म।। १९।।
(ऋ.६/६१/१-७, १०, ११, १३, १४)

सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमाने।
सरस्वतीं सुकृतो अह्वयन्त सरस्वती दाशुषे वार्यं दात्।। २०।।

सरस्वति या सरथं ययाथ स्वधाभिर्देवि पितृभिर्मदन्ती।
आसद्यास्मिन्बर्हिषि मादयस्वाऽनमीवा इष आ धेह्यस्मे।। २१।।

सरस्वतीं यां पितरो हवन्ते दक्षिणा यज्ञमभिनक्षमाणाः। सहस्रार्घमिळो अत्र भागं रायस्पोषं यजमानेषु धेहि।। २२।। (ऋ.१०/१७/७-९)

सरस्वती सरयुः सिन्धुरूर्मिभिर्महो महीरवसा यन्तु वक्षणीः।
देवीरापो मातरः सूदयित्न्वो घृतवत्पयो मधुमन्नो अर्चत।। २३।।

(ऋ.१०/६४/९)

इति ऋग्वेदीयाः, यजुर्वेदीयाः

देवा यज्ञमतन्वत भेषजं भिषजाश्विना।
वाचा सरस्वती भिषगिन्द्रायेन्द्रियाणि दधतः।। २४।।

सरस्वती मनसा पेशलं वसु नासत्याभ्यां वयति दर्शतं वपुः।
रसं परिस्रुता न रोहितं नग्नहुर्धीरस्तसरं न वेम।। २५।।

सरस्वती योन्यां गर्भमन्तरश्विभ्यां पत्नी सुकृतं बिभर्ति।
अपाꣳ रसेन वरुणो न साम्नेन्द्र ꣳ श्रियै जनयन्नप्सु राजा।। २६।।

(यजु.१९/१२, ८३, ९४)

तनूपा भिषजा सुतेऽश्विनोभा सरस्वती।
मध्वा रजाꣳसीन्द्रियमिन्द्राय पथिभिर्वहान्।। २७।। (यजु.२०/५६)

आदित्यैर्नो भारती वष्टु यज्ञ ꣳ सरस्वती सह रुद्रैर्नऽआवीत्। इडोपहूता वसुभिः सजोषा यज्ञं नो देवीरमृतेषु धत्त।। २८।। (यजु.२९/८)

इति यजुर्वेदीयाः, सामवेदीयः

उत नः प्रिया प्रियासु सप्तस्वसा सुजुष्टा।
सरस्वती स्तोम्या भूत्।। २९।। (साम.१४६१)

इति सामवेदीयः, अथर्ववेदीयाः

अद्याग्ने अद्य सवितरद्य देवि सरस्वति।
अद्यास्य ब्रह्मणस्पते धनुरिवा तानया पसः।। ३०।। (अथर्व.४/४/६)

सरस्वतीमनुमतिं भगं यन्तो हवामहे। वाचं जुष्टां मधुमतीमवादिषं देवानां देवहूतिषु।। ३१।। (अथर्व.५/७/४)

सरस्वति व्रतेषु ते दिव्येषु देवि धामसु।
जुषस्व हव्यमाहुतं प्रजां देवि ररास्व नः।। ३२।।

इदं ते हव्यं घृतवत्सरस्वतीदं पितृणां हविरास्यं यत्।
इमानि त उदिता शन्तमानि तेभिर्वयं मधुमन्तः स्याम।। ३३।।

शिवा नः शन्तमा भव सुमृडीका सरस्वति।
मा ते युयोम संदृशः।। ३४।। (अथर्व.७/६८/१-३)

सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमाने।
सरस्वतीं सुकृतो हवन्ते सरस्वती दाशुषे वार्यं दात्।। ३५।।

सरस्वतीं पितरो हवन्ते दक्षिणा यज्ञमभिनक्षमाणाः।
आसद्यास्मिन्बर्हिषि मादयध्वमनमीवा इष आ धेह्यस्मे।। ३६।।

सरस्वती या सरथं ययाथोक्थैः स्वधाभिर्देवि पितृभिर्मदन्ति। सहस्रार्धमिळो अत्र भागं रायस्पोषं यजमानाय धेहि।। ३७।। (अथर्व.१८/१/४१-४३)

अथर्ववेदीयाः **इति सरस्वती देवताक मन्त्राः**

शतहस्त समाहर सहस्रहस्त संकिर। (अथर्व. 3/20/5)
सैकड़ों हाथों से कमाओ,
हजार हाथों से व्यय करो।

स्वस्तिवाचन

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम्।। १।। (ऋ.१/१/१)

स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव।
सचस्वा नः स्वस्तये।। २।। (ऋ.१/१/९)

स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः। स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुना।।३।। (ऋ.५/५१/११)

स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः। बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः।। ४।। (ऋ.५/५१/१२)

विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये। देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः।। ५।। (ऋ.५/५१/१३)

स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति। स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि।। ६।। (ऋ.५/५१/१४)

स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाविव। पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि।। ७।। (ऋ.५/५१/१५)

ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः। ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।। ८।। (ऋ.७/३५/१५)

येभ्यो माता मधुमत्पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः। उक्थशुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नसस्ताँ आदित्याँ अनुमदा स्वस्तये।। ९।। (ऋ.१०/६३/३)

नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा बृहद्देवासो अमृतत्वमानशुः।
ज्योतीरथा अहिमाया अनागसो दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये।।
।। १०।। (ऋ.१०/६३/४)

सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुरपरिह्वृता दधिरे दिवि क्षयम्।
ताँ आ विवास नमसा सुवृक्तिभिर्महो आदित्याँ अदितिं स्वस्तये।।
।। ११।। (ऋ.१०/६३/५)

को वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ विश्वे देवासो मनुषो यति ष्ठन। को वोऽध्वरं तुविजाता अरं करद्यो नः पर्षदत्यंहः स्वस्तये।।
।। १२।। (ऋ.१०/६३/६)

येभ्यो होत्रां प्रथमामायेजे मनुः समिद्धाग्निर्मनसा सप्त होतृभिः।
त आदित्या अभयं शर्म यच्छत सुगा नः कर्त सुपथा स्वस्तये।।
।। १३।। (ऋ.१०/६३/७)

य ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसो विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च मन्तवः।
ते नः कृतादकृतादेनसस्पर्यद्या देवासः पिपृता स्वस्तये।। १४।।
(ऋ.१०/६३/८)

भरेष्विन्द्रं सुहवं हवामहेंऽहोमुचं सुकृतं दैव्यं जनम्। अग्निं मित्रं वरुणं सातये भगं द्यावापृथिवी मरुतः स्वस्तये।। १५।। (ऋ.१०/६३/९)

सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम्। दैवीं नावं स्वरित्रामनागसमस्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये।। १६।। (ऋ.१०/६३/१०)

विश्वे यजत्रा अधि वोचतोतये त्रायध्वं नो दुरेवाया अभिह्रुतः।
सत्यया वो देवहूत्या हुवेम शृण्वतो देवा अवसे स्वस्तये।। १७।।
(ऋ.१०/६३/११)

अपामीवामप विश्वामनाहुतिमपारातिं दुर्विदत्रामघायतः। आरे देवा द्वेषो अस्मद्युयोतनोरु णः शर्म यच्छता स्वस्तये।। १८।। (ऋ.१०/६३/१२)

अरिष्टः स मर्तो विश्व एधते प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि।
यमादित्यासो नयथा सुनीतिभिरति विश्वानि दुरिता स्वस्तये।।
।।१६।। (ऋ.१०/६३/१३)

यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं शूरसाता मरुतो हिते धने। प्रातर्यावाणं रथमिन्द्र सानसिमरिष्यन्तमा रुहेमा स्वस्तये।। २०।। (ऋ.१०/६३/१४)

स्वस्ति नः पथ्यासु धन्वसु स्वस्त्यप्सु वृजने स्वर्वति। स्वस्ति नः पुत्रकृथेषु योनिषु स्वस्ति राये मरुतो दधातन।। २१।। (ऋ.१०/६३/१५)

स्वस्तिरिद्धि प्रपथे श्रेष्ठा रेक्णस्वत्यभि या वाममेति। सा नो अमा सो अरणे नि पातु स्वावेशा भवतु देवगोपा।। २२।। (ऋ.१०/६३/१६)

इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवाऽअयक्ष्मा मा व स्तेनऽईशत माघशꣳसो ध्रुवाऽअस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि।। २३।। (यजु.१/१)

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासोऽ अपरीतासऽउद्भिदः।
देवा नो यथा सदमिद् वृधेऽअसन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे।। २४।।
(यजु.२५/१४)

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानाꣳ रातिरभि नो निवर्त्तताम्।
देवानाꣳ सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे।।
।।२५।। (यजु.२५/१५)

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।। २६।।
(यजु.२५/१८)

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो ऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।। २७।। (यजु.२५/१९)

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।। २८।।
(यजु.२५/२१)

अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये।
नि होता सत्सि बर्हिषि।। ।। २९।। (सा.पू.१/१/१)

त्वमग्ने यज्ञाना ꣳ होता विश्वेषा ꣳ हितः।
देवेभिर्मानुषे जने।। ३०।। (सा.पू.१/१/२)

ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः।
वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो ऽअद्य दधातु मे।। ३१।। (अथर्व.१/१/१)

योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम्।
स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः।।

जो द्विज वेद का अध्ययन न करके अन्य ग्रन्थों के पढ़ने में अथवा अन्य कर्मों को करने में परिश्रम करता है, वह जीते जी ही अपने वंश सहित शीघ्र शूद्रत्व को प्राप्त हो जाता है।

न वेत्ति यो यस्य गुणप्रकर्षं स तं सदा निन्दति नाऽत्र चित्रम्।
यथा किरातिः करिकुम्भजाता मुक्ताः परित्यज्य बिभर्त्ति गुञ्जाः।।

जो जिसके गुणों की श्रेष्ठता को नहीं जानता, वह सदा उसकी निन्दा करता है यह तनिक भी आश्चर्य की बात नहीं है। देखो न ! भीलनी हाथी के मस्तक से उत्पन्न होनेवाले मोतियों को छोड़कर घुंघची की माला को धारण करती है।

शान्तिकरण

शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या।
शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ।। १।।
(ऋ.७/३५/१)

शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरन्धिः शमु सन्तु रायः। शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु।। २।। (ऋ.७/३५/२)

शं नो धाता शमु धर्ता नो अस्तु शं न उरूची भवतु स्वधाभिः।
शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिः शं नो देवानां सुहवानि सन्तु।।
।। ३।। (ऋ.७/३५/३)

शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रावरुणावश्विना शम्।
शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभि वातु वातः।।
।। ४।। (ऋ.७/३५/४)

शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु। शं न ओषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः।। ५।। (ऋ.७/३५/५)

शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुणः सुशंसः। शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः शं नस्त्वष्टाग्नाभिरिह शृणोतु।। ६।। (ऋ.७/३५/६)

शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाणः शमु सन्तु यज्ञाः। शं नः स्वरूणां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्वः शम्वस्तु वेदिः।। ७।। (ऋ.७/३५/७)

शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चत्रः प्रदिशो भवन्तु। शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः।। ८।। (ऋ.७/३५/८)

शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः। शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायुः।। ९।। (ऋ.७/३५/९)

शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभातीः। शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शम्भुः।। १०।। (ऋ.७/३५/१०)

शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु। शमभिषाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः।। ११।। (ऋ.७/३५/११)

शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः।
शं नः ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु।। १२।।
(ऋ.७/३५/१२)

शं नो अज एकपाद्देवो अस्तु शं नोऽहिर्बुध्न्यः शं समुद्रः। शं नो अपां नपात्पेरुरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपाः।। १३।। (ऋ.७/३५/१३)

इन्द्रो विश्वस्य राजति।
शन्नोऽअस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे।। १४।। (यजु.३६/८)

शन्नो वातः पवता ꣳ शन्नस्तपतु सूर्य्यः।
शन्नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्योऽअभि वर्षतु।। १५।। (यजु.३६/१०)
अहानि शम्भवन्तु नः श ꣳ रात्रीः प्रति धीयताम्। शन्न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शन्न इन्द्रावरुणा रातहव्या। शन्न इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शंयोः।। १६।। (यजु.३६/११)

शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभि स्रवन्तु नः।। १७।। (यजु.३६/१२)

द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः
शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः
शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः
सा मा शान्तिरेधि।।१८।। (यजु.३६/१७)

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ँ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतम्भूयश्च शरदः शतात्।।१६।। (यजु.३६/२४)

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति। दूरग्मं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।२०।। (यजु.३४/१)

येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।
यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।२१।।
(यजु.३४/२)

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु। यस्मान्नऽऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।२२।। (यजु.३४/३)

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम्। येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।२३।। (यजु.३४/४)

यस्मिन्नृचः साम यजू ꣳ षि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः।
यस्मिँश्चित्त ँ सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।२४।।
(यजु.३४/५)

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिनऽइव। हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।२५।। (यजु.३४/६)

स नः पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते।
श ꣳ राजन्नोषधीभ्यः।। २६ ।। (साम.उ.१/१/३)

अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे। अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु।।२७।। (अथर्व.१६/१५/५)

अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात्। अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।।२८।। (अथर्व.१६/१५/६)

आर्य समाजस्य दश नियमाः

प्रथमः सर्वाः सत्यविद्या ये च पदार्था विद्यया ज्ञायन्ते तेषां सर्वेषाम् आदिमूलं परमेश्वरोऽस्ति।

द्वितीयः ईश्वरः सच्चिदानन्दस्वरूपः, निराकारः, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालुः, अजन्मा, अनन्तः, निर्विकारः, अनादिः, अनुपमः, सर्वाधारः, सर्वेश्वरः, सर्वव्यापकः, सर्वान्तर्यामी, अजरः, अमरः, अभयः, नित्यः, पवित्रम्, सृष्टिकर्त्ताचाऽस्ति तस्यैवोपासना करणीयाऽस्ति।

तृतीयः वेदः सर्वासां सत्यविद्यानां पुस्तकमस्ति। वेदस्य पठनं-पाठनं श्रवणं-श्रावणं च सर्वेषामार्याणां परमो धर्मः।

चतुर्थः सत्यस्य ग्रहणे असत्यस्य च त्यागे सर्वदा सन्नद्धैर्भाव्यम्।

पञ्चमः सर्वाणि कार्याणि धर्मानुसारं अर्थात् सत्यासत्यं विचार्य करणीयानि।

षष्ठः संसारस्योपकारोऽस्य समाजस्य मुख्योद्देश्यमस्ति अर्थात् शारीरिकी, आत्मिकी, सामाजिकी चोन्नतिः करणीया।

सप्तमः सर्वैः सह प्रीतिपूर्वकं धर्मानुसारं यथायोग्यं च वर्तनीयम्।

अष्टमः अविद्यायाः नाशो विद्यायाश्च वृद्धिः करणीया।

नवमः प्रत्येकं स्वकीयोन्नतावेव सन्तोषो न कार्यः किन्तु सर्वेषामुन्नतौ स्वकीयोन्नतिर्मन्तव्या।

दशमः सर्वैर्मनुष्यैः सामाजिकानां सर्वहितकारिनियमानामाचरणे परतन्त्रैर्भाव्यम् प्रत्येकस्मिन्हितकारिणि नियमे च सर्वे स्वतन्त्राः स्युः।

बृहद्यज्ञ मन्त्रपाठ

यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम्। अग्निष्टत् स्विष्टकृद् विद्यात् सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे। अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा।। इदमग्नये स्विष्टकृते - इदन्न मम।। १।। (आश्व.१/१०/२२)

ओं प्रजापतये स्वाहा।। इदं प्रजापतये - इदन्न मम।। २।। (यजु.१८/२२)

ओं भूर्भुवः स्वः। अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनां स्वाहा।। इदमग्नये पवमानाय - इदन्न मम।। ।। ३।। (ऋ.९/६६/१९)

ओं भूर्भुवः स्वः। अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः। तमीमहे महागयं स्वाहा।। इदमग्नये पवमानाय - इदन्न मम।। ४।। (ऋ.९/६६/२०)

ओं भूर्भुवः स्वः। अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम्। दधद्रयिं मयि पोषं स्वाहा।। इदमग्नये पवमानाय - इदन्न मम।। ५।। (ऋ.९/६६/२१)

ओं भूर्भुवः स्वः। प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणां स्वाहा।। इदं प्रजापतये - इदन्न मम।। ६।। (ऋ.१०/१२१/१०)

त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेळोऽवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्र मुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा।। इदमग्निवरुणाभ्याम् - इदन्न मम।। ७।। (ऋ.४/१/४)

स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठोऽअस्या उषसो व्युष्टौ।
अव यक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि मृळीकं सुहवो न एधि स्वाहा।।
इदमग्निवरुणाभ्याम् - इदन्न मम।। ८।। (ऋ.४/१/५)

इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृळय। त्वामवस्युराचके स्वाहा।।
इदं वरुणाय - इदन्न मम।। ९।। (ऋ.१/२५/१९)

तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न आयुः प्र मोषीः स्वाहा।।
इदं वरुणाय - इदन्न मम।। १०।। (ऋ.१/२४/११)

ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः।
तेभिर्नोऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा।।
इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः - इदन्न मम।। ११।। (का.श्रौत.२५/१/११)

अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्त्वमयाऽसि।
अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजꣳ स्वाहा।।
इदमग्नये अयसे - इदन्न मम ।। १२।। (का.श्रौत.२५/१/११)

उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा।। इदं वरुणाया ऽऽदित्याया ऽदितये च - इदन्न मम।। १३।। (ऋ.१/२४/१५)

भवतन्नः समनसौ सचेतसावरेपसौ। मा यज्ञꣳ हिꣳ सिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः स्वाहा।। इदं जातवेदोभ्याम्-इदन्न मम।। १४।। (यजु.५/३)

गोविन्दशान्ति बिंजराजका वटुक विकास केन्द्र, एवं पाणिनीया पाठशाला, अलियाबाद, एक परिचय..

आचार्य भवभूति जी, जो १८ वर्षों तक पहाड़गंज दिल्ली में गुरुकुल का सफल संचालन अनुभव प्राप्त करके २०१२ ईस्वी में अलियाबाद तेलगाणा में वटुक विकास केन्द्र नाम से स्थापना कर संचालन कर रहे हैं। हैदराबाद निवासी बिंजराजका परिवार द्वारा स्थान एवं आवास की व्यवस्था बिंजराजका न्यास की ओर से गुरुकुल को निःशुल्क प्राप्त है। वर्तमान में यहाँ पैतीस छोटे-बड़े ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं। इस वर्ष पाणिनीया पाठशाला नाम से आर्ष पाठ्यक्रम का विभाग भी खोला गया है.. जिसमें अष्टाध्यायी क्रम से महर्षि दयानन्द निर्दिष्ट विधि से अध्यापन व्यवस्था है। इस व्यवस्था में प्रथम सत्र हेतु उक्त पैतीस में से दस विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया है।

पांच वर्ष की आयु से ही यहाँ बालक का प्रवेश होता है। आठवीं कक्षा तक की परीक्षाएँ यहीं विद्यालय में ली जाती हैं तथा नौवीं से आगे की परीक्षाएँ सरकारमान्य संस्थाओं से दिलवाई जाती हैं। इस गुरुकुल में आधुनिक विषयों में से अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, इतिहास हिन्दी एवं तेलगु भाषाज्ञान के साथ ही आदर्श वैदिक दिनचर्या जिसमें प्रतिदिन ध्यान-आसन-व्यायाम-प्राणायाम, दोनों समय अग्निहोत्र, वेदपाठ, श्लोकगायन, वैदिक ग्रन्थों का स्वाध्याय, आत्मनिरीक्षण आदि कराया जाता है। शुद्ध शाकाहारी भोजन, गुरुकुल की गोशाला से गायों का दूध, फलादि सात्विक एव पौष्टिक भोज्य वटुकों को प्राप्त होता है।

बिना किसी सरकारी अनुदान से चलनेवाले इस गुरुकुल के लिए दानी महानुभावों से सहायता की अपेक्षा की जाती है..!!

..."आर्यवीर"